6 साल बेमिसाल
सामाजिक गतिविधियों का लेखा जोखा
सबसे पहले सबसे तेज

कुमावत इंडिया

Email : kumawatindiapatrika@gmail.com
Website : www.kumawatindiapatrika.in

वर्ष-7 | अंक-12 जुलाई-2024 पृष्ठ-32 मूल्य : ₹ 20.00

पवन कुमावत

वर्ल्ड स्टेंथ चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ ।

नंदकिशोर कुमावत

सिल्वर पदक जीतने पर हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं

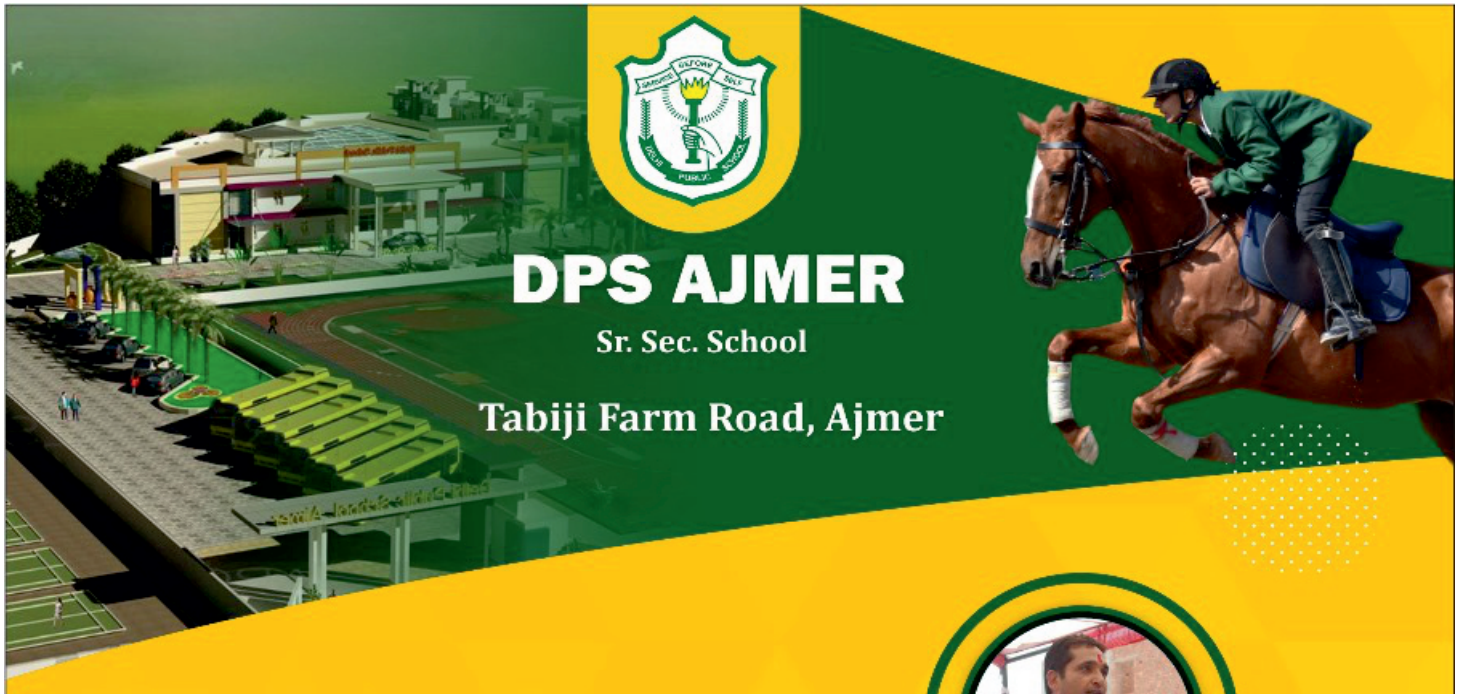

DPS AJMER

Sr. Sec. School

Tabiji Farm Road, Ajmer

SHASHI PAL KUMAWAT
Chairman

ESTABLISHING
The Right Environment

We believe in building a modern culture using both traditional & next-generation tools. So, your child's natural talents can blossom.

Archery & International
Level Shooting Range

Swimming Pool
"DPS Wave Pulse"

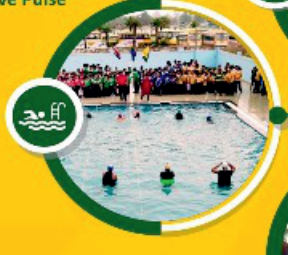

Horse Riding Club
Won Laurels at the National Level

Our Activities

Skating Rink

Karate Club
We have won Karate Championship at District, State & National Level.

Art & Craft

Tabiji Farm Road, Near D.D. Puram, Beawar Road, Ajmer

Web: www.dpsajmer.in E-Mail: info@dpsajmer.in

कुमावत प्रगति ट्रस्ट

पता : एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018

संरक्षक	:	जयकिशन सोकिल	**मो. 9829125428**
अध्यक्ष	:	रामप्रकाश कुमावत एडवोकेट	**मो. 9887440666**
उपाध्यक्ष	:	रामप्रकाश कुमावत (मारवाल)	**मो. 9414074376**
सचिव	:	श्रीमती भारती तोंदवाल	**मो. 9414810584**
कोषाध्यक्ष	:	लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल	**मो. 9549656438**
सदस्य ट्रस्टी	:	सी.एम. कुमावत (बड़ीवाल)	**मो. 9829056063**
		रमेश कुमावत (गेदर)	**मो. 9414554322**
		चेतन बालोदिया	**मो. 9414052736**
		मोहन लाल कुमावत	**मो. 9887557425**
मुख्य सलाहकार	:	सुरेन्द्र कुमार वर्मा (नागा)	**मो. 9414994006**
सलाहकार	:	गिरधारी लाल सिंघनवाल	**मो. 9414263429**

सम्पादक मण्डल : रमेश चन्द कुमावत (गैदर) सम्पादक -9414554322, जयसिंह गुड़ीवाल सह-सम्पादक 9461343432, मनीष कुमावत 9660702083, रमेश तोंदवाल 9460870125 रवि कुमावत 9829600411, लक्ष्मीनारायण सिरस्वा 9829791846, उर्वशी बालोदिया 9351680888, प्रिया मारवाल 9408093778 **पदेन सदस्य :** अध्यक्ष, सचिव एवं प्रकाशक।

व्यवस्थापक मण्डल : महेश चन्द जलान्धरा 9828118789, लालचन्द धुंधारिया 9413335998, सुरेन्द्र मारोठिया 9314820385, राजेश धुंधारिया 9314506330, राजेश कुमावत (मरोडिया) 9829097496, अशोक कुमावत -9352070394, श्रीमती शशि कला बालोदिया, मुकेश कारगवाल 9828606056 व राजसिंह बधानिया 9414238799 **उप-कोषाध्यक्ष :** खेमचंद खड़गटा 9829140629 **विधि सलाहकार :** राकेश कुमावत एडवोकेट 9829152561 विशेष आमंत्रित सदस्य : मनोज सिरस्वा।

पत्रिका सहयोगी :

छत्तीसगढ़ : रमेश कुमार तुनवाल **मो. 9425234397 दिल्ली :** राधेश्याम घासोलिया **मो. 9818711580 सूरत :** शुभकरण किरोड़ीवाल **मो. 9898097444 वापी :** कृष्णगोपाल **मो. 9824892299 मुम्बई :** विजय किरोड़ीवाल, **मो. 9867177188 जींद (हरियाणा) :** बलवीर सिंह वर्मा **मो. 9355322301 कोटा :** चन्द्र प्रकाश कांकर **मो. 9214983402 सीकर :** रामगोपाल भोड़ीवाल **मो. 9610784657 उदयपुर :** घनश्याम पटवा **मो. 9460913044,** जगदीश मामोडिया **मो. 9024805687 ब्यावर :** नरेन्द्र आर्य **मो. 8107944493,** रवि बेडवाल **मो. 8290303003 बगरू :** चेनसुख बड़ीवाल **मो. 9929012957 सांगानेर :** सोहनलाल अजमेरा **मो. 9636860812 इंदौर :** नेमीचंद कारवाल **मो. 9993998645 किशनगढ़ :** प्रभुदयाल तुनगरिया **9680931428**

प्रोसेसिंग व मुद्रक : राज ब्लॉक्स, चौड़ा रास्ता व 22 गोदाम, जयपुर

सदस्यता शुल्क रु. : विशिष्ठ संरक्षक- 5000, संरक्षक-3000, 10 वर्षीय-1300 एवं 5 वर्षीय-650

विज्ञापन दरें : अंतिम कवर पृष्ठ-3500, कवर पृष्ठ अन्दर, 3000, अन्दर 1 पृष्ठ-2500, 1/2 पृष्ठ-1300, 1/4 पृष्ठ-700

नोट 1 : संरक्षक सदस्य को आजीवन (25 वर्ष) तक पत्रिका प्रेषित व 1 बार मय फोटो परिचय प्रकाशन, विशिष्ठ संरक्षक का आजीवन पत्रिका व प्रत्येक अंक में 10 वर्ष तक नाम का प्रकाशन।

नोट 2. 12 विज्ञापन निरन्तर देने पर 2 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किये जायेंगे। 6 विज्ञापन निरन्तर देने पर 1 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किया जायेगा।

बैंक खाता : कुमावत प्रगति ट्रस्ट, संख्या 13850110020562 यूको बैंक, गांधी सर्किल, जयपुर, IFS Code : UCBA0001385

यदि राशि सीधे बैंक खाते में स्लिप/ऑनलाइन जमा कराई गई है तो कृपया व्हाट्सएप नं. 9549656438 पर रसीद प्रेषित करें।

स्वत्वाधिकार : कुमावत प्रगति ट्रस्ट के लिए प्रकाशक, मुद्रक सी.एम. कुमावत द्वारा राज ब्लॉक्स, बी-81, करतारपुरा इण्डस्ट्रीयल एरिया, 22 गोदाम, जयपुर से मुद्रित एवं एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018 से प्रकाशित, सम्पादक रमेश चंद कुमावत।

सम्पादकीय

टी-20 विश्वकप क्रिकेट में अपराजित रहकर भारतीय टीम ने जीत दर्ज कर दिखा दिया कि वह इस खेल की सिरमोर है। उसके बाद महिला क्रिकेट टीम तथा जिम्बावे में भारतीय टीम ने भी जीत दर्ज कर विदेश में भारत का झंडा गाड़ दिया। इसके अलावा पिछले कुछ वर्षों में अन्य खेल प्रतियोगिताओं में भारतीय टीम का उम्दा प्रदर्शन रहा है। ये सब रातोंरात नहीं हुआ। इसके पीछे है प्रशिक्षण, प्रेक्टिस, लक्ष्य और आत्मबल। इसके लिए एक खिलाड़ी, उसके परिवार, खेल संघ तथा सरकार ने कड़ी मेहनत की और सही दिशा दी। फिर आपने देखा अनुकूल परिणाम सामने है।

आज भारत हर क्षेत्र में अपनी बुलन्दी के झण्डे गाड़ रहा है। हमारी सरकार की इच्छा शक्ति व नीतियों के साथ देश के लोग खड़े हैं। अर्थव्यवस्था हो, चाहे अन्तरिक्ष या फिर इन्फ्रास्ट्रक्चर हमने नई ऊँचाईयां छुई हैं। आजादी के 75 साल बाद ही सही हमने विश्व को अपना कौशल दिखाया है। हम भारतीय किसी से कम नहीं हैं। अवसर मिले तो हम बहुत कुछ करने की सामर्थ्य रखते हैं।

अब बात करता हूँ हमारे कुमावत समाज की। हमारे समाज के युवक-युवतियों ने कम संसाधन होते हुए भी हाल ही में जारी CA रिजल्ट में सफलता के परचम फहराये हैं, इन सभी को 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई। इससे पहले NEET तथा 10वीं एवं 12वीं बोर्ड में भी विद्यार्थियों ने 99% तक अंक अर्जित कर अपनी योग्यता का परिचय दिया है। प्रतिभा हमें विरासत में मिली है। हम सब जानते हैं कि हमारे पूर्वज एक-एक पत्थर व ईंट जोड़कर विशाल भवन बनाने में इतने दक्ष थे कि 250 वर्ष पुरानी ईमारतें आज भी खड़ी हैं और पर्यटक इन्हें देखकर विस्मित हो जाते हैं।

किसी भी क्षेत्र में बुलन्दी हासिल करने के लिए 'लक्ष्य' निर्धारण जरूरी होता है। तत्पश्चात इस सम्बन्ध में योजना बनाकर आगे बढ़ना होता है। इसके लिए कड़ी मेहनत, लगन, आत्म विश्वास की पूंजी को सहेजकर रखना तथा समय का सदुपयोग करना पड़ता है। इसके साथ परिवार का सहयोग ओर समर्थन भी जरूरी है, तब ही सार्थक परिणाम लाये जा सकते हैं। यदि प्रयास के बावजूद असफल भी रहे तो हारे नहीं, इस असफलता से सीख मिलती है जो आगे सफलता दिलाती है। पहले भी जो लोग सफल रहे हैं उन्होंने अनेक असफलता के बाद सफलता दर्ज की है।

हमारे युवा निष्क्रिय नहीं रहे यह देखना परिवार की जिम्मेदारी है। उन्हें समय पर उठने की आदत डालिए जिससे वे घूमना, योग व एक्सरसाईज कर सकें ताकि वे फिट रहें। एक फिट व्यक्ति ही स्वस्थ रह सकता है। यदि हम विश्व के सफल व्यक्तियों के बारे में जानें तो एक बात सभी में कॉमन है वह है जल्दी उठने की आदत। इस कारण वे बहुत से काम तब तक निपटा लेते हैं जब तक सामान्य लोग बिस्तर से उठते हैं।

समाजजनों स्वतंत्रता दिवस, रक्षाबंधन तथा जन्माष्टमी पर्व शीघ्र आने वाला है। आप सभी को इन त्योहारों की अग्रिम शुभकामनाएं।

- रमेश कुमावत (गैदर)

हमारी वेवबसाइट www.kumawatindiapatrika.in पर आप 'कुमावत इंडिया' पत्रिका के पिछले अंक व अन्य विवरण देख सकते हैं।

सम्पादकीय 3
टीम इंडिया ने जीता टी-20 विश्व कप-2024 5
नि:शुल्क हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन हुआ 5
डीडी ग्रुप चलाएगा देशभर में 108 श्री हनुमंत कथाओं की शृंखला 6
दीपेन्द्र कुमावत को मिली एमएजेएमसी की उपाधि 6
भारती श्रमजीवी पत्रकार संघ में सुरेश नेमीवाल सोशल मीडिया प्रभारी नियुक्त 6
मन की बात : "एक पेड़ माँ के नाम" से लगायें : पी.एम. मोदी 7
मोहन बालोदिया का म्यूजिक कार्यक्रम 28 जुलाई को 7
एक लीटर पानी से लगे पौधों की तकनीक की सराहना की 7
कुमावत समाज सेवा समिति किशनगढ़-रेनवाल : प्रतिभा सम्मान समारोह 7
रक्तदान शिविर का आयोजन: 102 रक्तवीरों ने किया रक्तदान 8
श्री कुमावत क्षत्रिय सामूहिक विवाह समिति जयपुर की कार्यकारिणी घोषित 8
जयपुर से वैष्णो देवी के लिए पदयात्रा रवाना 8
नासिक में 12वाँ युवक-युवती परिचय सम्मेलन व सम्मान समारोह सम्पन्न 9
प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन 18 अगस्त को 9
परिणय सूत्र में बंधे सर्व समाज के 4 जोड़े 9
वीरांगना काली बाई 10
संत गरवाजी का मेला सम्पन्न 10
भारतीय कुमावत क्षत्रिय महासभा का अधिवेशन मंदसौर में सम्पन्न 11
सीए परीक्षा में लहराया सफलता का परचम, समाज का नाम किया रोशन 12
रक्षा बंधन पर्व : हमारी समृद्ध विरासत का प्रतीक 13
मानव शरीर में ऊर्जा के केन्द्र है चक्र 15
कुमावत कलर्स एंड हार्डवेयर गैलेरी का शुभारम्भ 15
भारत में 50 प्रतिशत वयस्क निष्क्रिय जीवन शैली के शिकार 16
सीताजी की उदारता का प्रेरक प्रसंग 17
नारियल की चटनी 17
गायों की होती दुर्दशा ... 18
दिल्ली का लोह स्तंभ 18
श्रीकृष्ण से मिली शिक्षा : एक अनमोल धरोहर 19
चाय के प्याले में तूफ़ान 19
वृक्षों का महत्व 20
कृष्ण तत्व 20
आग्नेय कोण में बेडरूम के दुष्प्रभाव 21
गैर-हिन्दुओं को ध्वज स्तम्भ क्षेत्र से आगे जाने की इजाजत नहीं 21
पारिवारिक जीवन में हम समन्वयवादी बनें 22
बाड़ करेला (ककोड़े यानी मीठा करेला) 23
वर्ल्ड स्ट्रेंथ चैंपियनशिप में नन्दकिशोर कुमावत ने जीता सिल्वर पदक 23
विशिष्ट संरक्षक सूची व श्रद्धांजलि 24
विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची 25
पत्रिका नहीं मिलने पर सम्पर्क करें 26
नेशनल पॉवर लिफ्टिंग में 7 गोल्ड जीतने पर दुर्गा कुमावत सम्मानित 27
पवन ने कजाकिस्तान में जीता गोल्ड मेडल 27
विष्णु प्रसाद बने सचिवालय संघल के मंत्री 27
इंटरनेशनल बैडमिंटन खिलाड़ी हर्षित चौधरी ने जीते मेडल 26
सीए बनने पर बधाई, मुदित का सेनाओं की टॉप ब्रांच में चयन 28
डॉ. गणपत लाल को बीएएमएस की उपाधि 28
श्रद्धांजलि स्वरूप वृक्षारोपण 29
ज्योति ग्रुप ऑफ स्कूल को सर्वश्रेष्ठ सम्मान 29

बधाई

तनीशा कुमावत

को CA बनने पर

हार्दिक बधाई

शुभेच्छु

श्रीमती रेखा-विजय कुमावत (माता-पिता),
प्रतीक (भाई), हेमिका-पवन जी कुमावत (दीदी-जीजाजी),
योहान व डोल (दोहित्र-दोहित्री),
स्व. श्रीमती बिदामी देवी-स्व. प्रेमचन्दजी भोंरोदिया (दादी-दादा),
स्व. अशोक कुमावत (चाचा), स्व. श्रीमती नाथी देवी-स्व. श्री भंवर लाल
दम्बीवाल, स्व. श्रीमती सावित्री देवी-राम किशोर जी (नानी-नाना),
स्व. राकेश-श्रीमती मीरा देवी, राजेश-श्रीमती सोनी,
प्रमोद-श्रीमती कुसुमदेवी (मामा-मामी) एवं समस्त भोंरोदिया परिवार

ई-765, नकुल पथ, लालकोठी योजना, जयपुर मो. 9829046910

टीम इंडिया ने जीता टी-20 विश्व कप-2024

- बधाई! टीम इंडिया बनी विश्व विजेता
- विराट की पारी, हार्दिक की गेंद तथा सूर्या का जादुई केच
- सभी मैंचों में अजय रही टीम इंडिया
- देश में जश्न व दिवाली मनाई गई।
- प्रधानमंत्री मोदी ने खिलाड़ियों से बातकर बधाई दी।

बारबाडोस में 29 जून, 2024 के टी-20 विश्वकप के फाईनल में दक्षिण अफ्रीका के साथ खेलते हुए भारतीय क्रिकेट टीम ने 7 रन से जीत दर्ज कर विश्व कप अपने नाम कर लिया और 140 करोड़ भारतीयों का दिल जीत लिया तथा दूसरी बार यह खिताब जीता। दक्षिण अफ्रीका को आखिरी ओवर में 16 रनों की जरूरत थी। हार्दिक पाण्डया की पहली गेंद पर डेविड मिलकर ने शॉट खेला, छक्के के लिए जा रही गेंद को सूर्यकुमार ने बाउंड्री पर कैच कर जीत दर्ज कर दी। मैच में विराट कोहली ने 76 रन बना 'प्लेयर ऑफ दी मैच' बने। हार्दिक पाण्डाया व जसप्रीत बुमराह की गेंदबाजी ने पलटी बाजी। बुमराह प्लेयर ऑफ सीरीज रहे इन्होंने टूर्नामेंट में 15 विकेट लिए तथा हार्दिक ने 11 विकेट लिए। टीम इंडिया ने इस जीत के लिए 17 साल इंतजार किया, वर्ष 2007 में महेन्द्र धोनी की कप्तानी में टी-20 विश्वकप जीता था। भारतीय टीम के कोच राहुल द्रविड़ का इस जीत ने दिल जीत लिया वे खुशी से उछल पड़े।

विराट कोहली तथा रोहित शर्मा ने ओ-20 फारमेट से संन्यास लेने की घोषणा की। अगले दिन रविन्द्र जडेजा ने भी टी-20 को अलविदा कहा।

अब टी-20 की बागडोर युवा पीढ़ी के हाथ में होगी।

BCCI ने 125 करोड़ रुपये की पुरुस्कार राशि देने की घोषणा की। टीम इंडिया की स्वर्णिम जीत ने विदेशी धरती पर झण्डे गाड़ दिये। इसके पीछे है वर्षों की कड़ी मेहनत, संकल्प शक्ति, संघर्ष और आत्मबल। साथ ही है कोच राहुल द्रविड की सार्थक योजना, रणनीति व टीम का चयन। उधर बीसीसीआई ने भी रोहित शर्मा को कप्तानी देकर विश्वास किया। हमारे ये अनुभवी खिलाड़ी युवा भारतीय खिलाड़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बन गये हैं। बिना तपे कोई जांबाज नहीं बनता तथा मुश्किल घड़ी में धैर्य रखकर तथा विश्वास के साथ खेलकर ही जीत दर्ज की जाती है, यह फाईनल मैच में देखने को मिला।

टीम इंडिया भारत लौटकर प्रधानमंत्रीजी से मिली, उन्होंने खिलाड़ियों को बधाई दी तथा हौसला अफजाही की। मुम्बई में शाम को भव्य रोड शो में अप्रत्याशित रूप से लाखों लोग शामिल हुए।

नि:शुल्क हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन हुआ

कुमावत क्षत्रिय समाज विकास समिति, मालवीय नगर द्वारा हेल्थ चेकअप जांच व परामर्श शिविर का आयोजन मालवीय नगर में शिविर आकृति लैब के सहयोग से आयोजित किया गया। फ्री हेल्थ चेकअप शिविर में जनरल फिजिशियन, दंत रोग, फिजियोथैरेपिस्ट, नेत्र रोग, ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर विशेषज्ञों ने अपनी सेवाएं दी। साथ ही आयुर्वेदिक चिकित्सक की सेवाएं भी उपलब्ध कराई गईं। अमृता चाय उत्पादक ने आए हुए सभी महानुभावों को नि:शुल्क हर्बल चाय पिलाई।

कैंप में बड़ी संख्या में लोगों ने हिस्सा लिया। कुमावत क्षत्रिय समाज विकास समिति मालवीय नगर की अध्यक्षा भारती वर्मा ने बताया कि शिविर आयोजित करने का उद्देश्य लोगों को सेहत के प्रति जागरूक करना है। सचिव गौरव अजमेरा व सुरेंद्र घोड़ीवाल ने बताया कि फ्री हेल्थ चेकअप शिविर का समय सुबह 8:30 बजे से 1:00 बजे तक था। जिसमें डॉक्टर्स द्वारा चिकित्सा जांच तथा विभिन्न प्रकार की जांचे नि:शुल्क व कुछ जांचे रियायती दर पर की गई।

समाज के दानदाताओं श्री सी.एम. बड़ीवाल, श्री चेतन धुंधारिया, श्री चेतन बालोदिया, श्री खेमचंद खड़गटा, श्रीमती माया घोड़ीवाल, श्री सुरेन्द्र तारकशी, श्री धनन्जय कुमावत, श्री लक्ष्मीनारायण घोड़ीवाल आदि ने आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

शिविर के समापन पर मेडिकल टीम को माला पहनाकर व स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

डीडी ग्रुप चलाएगा देशभर में 108 श्री हनुंमत कथाओं की श्रृंखला/अकिंचन महाराज करेंगे कथा

देश-प्रदेश में धर्म और संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए हरिनाम संकीर्तन परिवार के तत्वावधान में डी डी ग्रुप की ओर से 108 श्री हनुमंत कथाओं का आयोजन किया जाएगा। इन सभी आयोजनों में व्यासपीठ से आदरणीय संत श्री मुरली मनोहर 'अकिंचन' महाराज अपनी रसमयी वाणी से श्री हनुमंत कथा का रसपान करवाएंगे। आयोजक ओमप्रकाश शर्मा ने बताया कि 108 कथाओं का आयोजन लगभग तीन वर्ष में संपन्न होगा। इन आयोजनों में श्री हनुमान चालीसा के सामूहिक पाठ, हरिनाम कीर्तन, गायत्री यज्ञ, संस्कार महोत्सव, पर्यावरण संरक्षण के लिए पौध वितरण, विद्यार्थियों को स्टेशनरी वितरण सहित अनेक परोपकारी कार्यक्रम भी समय-समय पर किए जाएंगे। 108 हनुमंत कथाएं विभिन्न मंदिरों और सार्वजनिक स्थानों पर आयोजित होंगी। इन सभी कथाओं की संपूर्ण व्यवस्था डी डी ग्रुप द्वारा की जाएगी।

क्षेत्र के स्थानीय लोगों को केवल श्रोताओं के बैठने की व्यवस्था एवं स्थान उपलब्ध करवाना होगा। डी डी ग्रुप के निदेशक ओम प्रकाश शर्मा ने बताया कि ये कथाएं तीन अथवा पांच दिवसीय होगी तथा प्रतिदिन 3 घंटे चलेगी समय-समय पर संत-महात्माओं का आशीर्वाद एवं गणमान्य प्रबुद्धजनों का सान्निध्य मिलता रहेगा। जो भी भक्तगण अपने क्षेत्र के किसी मंदिर अथवा सार्वजनिक स्थान पर उक्त श्रृंखला के अन्तर्गत कथा करवाना चाहते है वे डी डी ग्रुप के सदस्यों एवं हरिराम संकीर्तन परिवार से सम्पर्क कर अपने क्षेत्र में कथा सुनिश्चित करवा सकते है। 108 कथाओं की श्रृखंला का प्रथम आयोजन 10 जुलाई से टोंक रोड के महावीर नगर स्थित श्रीराम मंदिर में होगा। अकिंचन महाराज इससे पहले सन् 2002 से 2005 तक निर्बाध व निरन्तर 151 श्रीमद् भागवत् कथाएं कर चुके हैं।

दीपेन्द्र कुमावत को मिली MA.JMC की उपाधि

हरिदेव जोशी पत्रकारिता और जनसंचार विश्वविद्यालय का द्वितीय दीक्षांत समारोह 29 जून को जेएलएन मार्ग स्थित आर.ए. पोदार इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट जयपुर के सभागार में आयोजित हुआ। इस दौरान करोड़ों की लागत से बने नए विश्वविद्यालय भवन का लोकार्पण भी राजस्थान के राज्यपाल द्वारा किया गया। कालवाड, जयपुर निवासी दीपेन्द्र कुमावत पुत्र चन्द्रपाल कुमावत को राज्यपाल कलराज मिश्र व विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सुधी राजीव ने MA.JMC की उपाधि प्रदान की गई। बता दें दीपेन्द्र कुमावत ने तृतीय स्थान प्राप्त कर कुमावत समाज का नाम रोशन किया है। जिससे पूरे समाज में खुशी की लहर है। दीपेन्द्र कुमावत जयपुर के वरिष्ठ पत्रकारों में से एक है और पत्रकारिता क्षेत्र में जाना पहचाना नाम है। **'कुमावत इंडिया'** पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

भारती श्रमजीवी पत्रकार संघ में सुरेश नेमीवाल सोशल मीडिया प्रभारी नियुक्त

सीकर। भारती श्रमजीवी पत्रकार संघ (BSPS) के राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक पाण्डेय ने राजस्थान से संगठन के सक्रिय पत्रकार सुरेश नेमीवाल को भारती श्रमजीवी पत्रकार संघ(BSPS) में सोशल मीडिया का प्रभारी नियुक्त किया है। राजस्थान के सीकर जनपद के दांतारामगढ़ से सुरेश नेमीवाल को सोशल मीडिया प्रभारी बनाए जाने पर समाज व स्थानीय पत्रकारों में खुशी की लहर दौड़ पड़ी तथा समाज के गणमान्य लोगों व पत्रकारों ने उन्हें बधाई दी है। सुरेश नेमीवाल ने पत्रकारिता में स्नातकोत्तर की उपाधि ली है। पत्रकार सुरेश नेमीवाल ने भारती श्रमजीवी पत्रकार संघ के पदाधिकारियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस जिम्मेदारी को पूर्ण निष्ठा और जिम्मेदारी से निर्वहन करते हुए भारती श्रमजीवी पत्रकार संघ को मजबूती प्रदान करेंगे।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई व शुभकामना ?

मोदी 3.0 का पहला कार्यक्रम

''मन की बात'' का 111वाँ एपिसोड प्रसारित
''एक पेड़ माँ के नाम'' से लगायें : पी.एम. मोदी

30 जून, 2024 को रविवार के दिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लगभग 4 माह बाद ''मन की बात'' की। आकाशवाणी से प्रसारित इस कार्यक्रम की यह 111वीं कड़ी थी।

इस लोकप्रिय कार्यक्रम में मोदी ने चुनावों का सफल संचालन करने के लिए चुनाव आयोग व इससे जुड़े लोगों को बधाई दी। ''एक पेड़ माँ के नाम'' लगाने की अपील की। उन्होंने आदिवासी हूल दिवस, पुरी की रथ यात्रा, अमरनाथ यात्रा, पर्यावरण दिवस, योग दिवस आदि की चर्चा के साथ-साथ कुवैत रेडियो पर सप्ताह में एक दिन हिन्दी शो का जिक्र भी किया। पेरिस ओलम्पिक 26 जुलाई से होने जा रहे हैं का जिक्र कर खिलाड़ियों को शुभकामना दी तथा #CHEER 4 BHARAT हैश टैग के बारे में बताया। उन्होंने आन्ध्र प्रदेश के अल्लूरी सीताराम राजू जिले में उगाई जाने वाली की अरकू किस्म की कॉफी की वैश्विक पहुंच बढ़ाने के लिए गिरिजन सहकारी समिति का भी कार्यक्रम में उल्लेख किया। वहीं जम्मू-कश्मीर के पुलवामा में उगाई गई स्नो मटर की पहली खेप को लंदर भेजने के लिए अब्दुल रशीद मीर, चकरा गांव को श्रेय दिया तथा प्रशंसा की। केरल की आदिवासी महिलाओं द्वारा तैयार किये जा रहे कारतुम्बी रंगबिरंगे छातों के निर्माण व ऑन लाईन बिक्री का जिक्र 'लोकल फॉर वोकल' में किया।

इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रधानमंत्री समाज में बदलाव लाने वाले लोगों की चर्चा करते हैं। भारत की जनता से जुड़ाव के इस कार्यक्रम का प्रतिमाह सभी को प्रतीक्षा रहती है।

मोहन बालोदिया का म्यूजिक कार्यक्रम 28 जुलाई को

बॉलिवुड के गीतों के सदाबहार गायक मोहम्मद रफी की 44वीं पुण्य तिथि पर उनके गाये गानों पर आधारित कार्यक्रम 'आज पुरानी राहों से...' 28 जुलाई 2024 को सांय 6:00 बजे बिरला आडिटोरियम, जयपुर में होगा। इसमें सदाबहार गायक बालोदिया डायमंड बैण्ड व आर्केस्ट्रा, जयपुर के मोहन कुमार बालोदिया व रश्मी बालोदिया तथा साथी कलाकार मनभावन नगमें प्रस्तुत करके श्रोताओं का दिल जीतेंगें। यह इनका 115 गोल्डन एज स्टेज शो होगा जो एक कीर्तिमान है।

इसके पोस्टर का विमोचन हवामहल विधायक बालमुकुन्दाचार्य द्वारा किया गया। वहीं केन्द्र शासित प्रदेश के दमन बिच पर भी पोस्टर का विमोचन शुभकरण किरोड़ीवाल, कृष्णगोपाल मारवाल तथा कैलाश घोड़ावड़ द्वारा किया गया। इस अवसर पर चेतन कुमावत जिलाध्यक्ष भाजपा ओबीसी मोर्चा, जयपुर शहर तथा चेतन बालोदिया भी उपस्थित थे।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार की ओर से श्री मोहन कुमार बालोदिया को बहुत-बहुत शुभकामनाए।

एक लीटर पानी से लगे पौधों की तकनीक की सराहना की

जिला कलेक्टर सीकर जिला कलेक्टर कमर उल जमान चौधरी ने दांता गौशाला का निरीक्षण किया तथा एक लीटर पानी की तकनीक से लगे पौधों को देखकर इस तकनीक की सराहना की। इस अवसर पर एसडीएम गोविंद सिंह भींचर, तहसीलदार महिपाल सिंह राजावत, पद्मश्री सुंडाराम वर्मा (कुमावत) भी मौजूद रहे।

कुमावत गौरव कृषि वैज्ञानिक पद्मश्री सुंडाराम वर्मा (कुमावत) के द्वारा HDFC बैंक की सहायता से एक लीटर पानी से पेड-पौधे लगाए थे जो हरे भरे तथा बडे होकर लहलहा रहे है। सुंडाराम जी ने फसलों की अनेक उन्नत किस्म विकसित की है तथा एक वर्ष में चार फसल लेने का नवाचार किया है। जिला कलेक्टर ने कहा कि एक लीटर पानी की तकनीकी से पौधारोपण विधि का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार किया जाये।

कुमावत समाज सेवा समिति किशनगढ़-रेनवाल द्वारा प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

आगामी 4 अगस्त 2024 को कुमावत समाज सेवा समिति किशनगढ़-रेनवाल द्वारा तहसील स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया जायेगा जिसमें कक्षा 10 व 12 के विद्यार्थियों जिन्होने सत्र 2023-24 में 85% से अधिक अंक अर्जित किए हैं उन्हे कुमावत समाज सेवा सदन, किशनगढ़-रेनवाल के प्रांगण में सम्मानित किया जायेगा। तहसील अध्यक्ष श्री घनश्याम जेठवाल के नेतृत्व में एक शिष्टमण्डल कैबिनेट मंत्री श्रीमान जोराराम जी कुमावत से मिलकर मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है। साथ ही पूर्व विधायक श्री नवरत्न राजोरिया एवं एडवोकेट मनोहर सिंह को भी कार्यक्रम में आमन्त्रित किया गया है।

रक्तदान शिविर का आयोजन: 102 रक्तवीरों ने किया रक्तदान

अजय कुमावत की याद में स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक व बिंदास ब्रदर्स के संयुक्त तत्वावधान में तृतीय स्वैच्छिक रक्तदान व चिकित्सा जांच शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 102 रक्तवीरों ने रक्तदान किया। शिविर प्रात: 10.00 बजे प्रारम्भ हुआ जिसमें युवाओं के साथ महिलाओं ने भी बढ़-चढकर भाग लिया। हेरिटेज नगर निगम की महापौर मुनेश गुर्जर, भाजपा ओबीसी मोर्चा, जयपुर शहर के जिलाध्यक्ष चेतन कुमावत, पार्षद वीरेंद्र सिंह, हेमेंद्र शर्मा, मुकेश कुमावत, जिला मंत्री जयसिंह कुमावत, मनीष बगरानिया ने रक्तवीरों को छाता व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। चिकित्सा शिविर में बड़ी संख्या में लोगों ने चिकित्सा परामर्श ली।

इस अवसर पर भाजपा ओबीसी मोर्चा जयपुर शहर के जिलाध्यक्ष चेतन कुमावत ने युवाओं का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि जिंदगी बचाना सबसे बड़ा मानव धर्म है रक्तदान जाति व धर्म से ऊपर उठकर होता है। रक्तदान से किसी भी तरह की कोई कमजोरी नही आती। रक्तदान करते रहने से शरीर का संतुलन बना रहता है, शरीर से कई बीमारियों का खतरा दूर रहता है।

श्री कुमावत क्षत्रिय सामूहिक विवाह समिति (रजि.) जयपुर की कार्यकारिणी घोषित

श्री कुमावत क्षत्रिय सामूहिक विवाह समिति (रजि.) जयपुर की कार्यकारिणी के चुनाव संपन्न हुए जिसमें रूडमल कारगवाल अध्यक्ष, कमलेश कुमार मारोठिया महामंत्री व रामनारायण बबेरीवाल कोषाध्यक्ष निर्विरोध निर्वाचित घोषित किए गए थे।

नवनिर्वाचित पदाधिकारियों द्वारा कार्यकारिणी की घोषणा की गई जिसमें श्रीराम नीमीवाल संरक्षक, बाबूलाल सिरस्वा कार्यकारी अध्यक्ष, चौथमल अनाडिया वरिष्ठ उपाध्यक्ष, गणेश कुदीवाल उपाध्यक्ष, सुरेशचंद्र धमुनिया उपाध्यक्ष, मनोज सिरस्वा संगठन मंत्री, राजकुमार धमुनिया कार्यालय मंत्री, सुधीन्द्र बैरा कानून मंत्री, ज्ञानचंद राजोरिया प्रचार मंत्री, मोहनलाल खाटूवाल जनसंपर्क मंत्री, भीम सिंह भदानिया सांस्कृतिक मंत्री, नवल सरथल्या सह कोषाध्यक्ष, बाबूलाल मामोडिया, लालचंद धुंधारिया, सुरेंद्र मारोठिया, अशोक भोडिया, शंकर लाल बालोदिया, भोलाराम मारवाल, शिवदयाल धुंधारिया, महेंद्र लाल जालान्धरा, राकेश सिरोहिया, चंद्रप्रकाश मारवाल, सुरेश खोवाल, गुलाब देवी बबेरीवाल, रेणु कुंडलवाल, डॉ. विमलेश वर्मा व भेगराज कुमारी (सोनम) कार्यकारिणी सदस्य व रमेश चंद्र राणोलिया पदेन सदस्य मनोनीत किए गए। 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

जयपुर से वैष्णो देवी के लिए पदयात्रा रवाना

माँ वैष्णो देवी पदयात्रा सेवा समिति, जयपुर के तत्वाधान में माँ वैष्णों देवी व शिवखोडी के लिए 34वीं पदयात्रा शिव मंदिर, आदर्श बस्ती, टोंक फाटक, जयपुर से माता के जयघोष के साथ विशाल कलश यात्रा व गाजे-बाजे के साथ शोभायात्रा के रूप में रवाना हुई। जिसमें बड़ी संख्या में माता के भक्त शामिल हुए। पदयात्रा को जयपुर शहर सांसद मंजू शर्मा, मालवीय नगर विधायक कालीचरण सराफ व भाजपा ओबीसी मोर्चा, जयपुर शहर जिलाध्यक्ष चेतन कुमावत ने झंडे के साथ रवाना किया। श्रद्धालुओं के हाथों में बांस के बड़े डंडियों में माता की लहराती ध्वजाऐं धर्म व श्रद्धा दर्शाती रही। जयपुर शहर सांसद मंजू शर्मा ने कहा कि मां वैष्णों देवी सभी के लिए खुशहाली लेकर आये साथ ही सुखद यात्रा की प्रार्थना की। विधायक कालीचरण सराफ ने कहा कि पदयात्राओं से लोगों में धार्मिक सद्भावना का निर्माण होता है। ओबीसी मोर्चा, जयपुर शहर के जिलाध्यक्ष चेतन कुमावत ने कहा कि ऐसी पदयात्राओं से लोगों को सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है।

समिति के संस्थापक नवरतन राजोरिया ने बताया कि पदयात्रा के दौरान समिति द्वारा विभिन्न प्रांतों में तय किए पड़ाव स्थल पर विश्राम और भोजन की सुविधा रहेगी। यात्रा मोती डूंगरी गणेश मंदिर, ताडकेश्वर मंदिर, बड़ी चौपड़, सुभाष चौक, आमेर, कूकस चुंगी नाके माताजी के मंदिर में रात्रि विश्राम होगा। मनोहरपुर, कोटपुतली, शांहजहापुर, रेवाड़ी, झझर, रोहतक, जिन्द, नरवाना खनौरी, पातडा, संगरूर, मलेर, कोटला, लुधियाना, फगवाडा, जलान्धर, पठानकोट, लखनपुर, सांबा, कटवा, जम्मू, दोमेल होती हुई कटरा माँ वैष्णों देवी धाम सताईस दिन एवं पौनी मॉ नौ देवियों के होते हुए शिवखोडी के चरणों में 30 दिन में पहुंचेगी।

इस अवसर पर समिति के मुख्य संरक्षक पी.सी. कुमावत, बद्री प्रसाद मेरद्वाल, अध्यक्ष माधव बालोदिया, महामंत्री राजेन्द्र जूनवाल, गिरीश सैनी, संजय सिंह, भवानी सिंह चौहान, सुरेश कुमावत, प्रहलाद सिंह पंवार, मदन सिंह तंवर, सुनिता बालोदिया, चन्द्रकांता राजोरिया, नेमीचंद सोनी, गोपाल लाल मीणा, बजरंग सिंह चौहान, टिंकल यादव, राजेश बालोदिया पार्षद व रामपाल जूनवाल, जयसिंह गुड़ीवाल, अशोक गुप्ता, पवन कुमावत, नीतू गैदर सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे।

नासिक में 12वाँ युवक-युवती परिचय सम्मेलन व सम्मान समारोह सम्पन्न

नासिक कुमावत-बेलदार समाज उन्नति मण्डल ने 23 जून 2024 को लक्ष्मण जी हाल, सूपर्णखा मंदिर के पास तपोवन में 12वाँ राज्य स्तरीय युवक-युवती परिचय सम्मेलन तथा प्रतिभावान छात्र एवं वरिष्ठ समाजजनों का सम्मान समारोह आयोजित कर अभिनव पहल की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उपजिला अधिकारी नितिन जी मुण्डावरे, अतिरिक्त लोक अभियोजक राजेन्द्र बाघडामण, भारतीय कुमावत क्षत्रिय महासभा उपाध्यक्ष प्रफुल्ल कुमावत, महासभा के जनगणना मंत्री सत्यनारायण जाजुरे, पूर्व स्थाई समिति अध्यक्ष संभाजी नगर निगम अविनाश कुमावत, महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष साहिब राव कुमावत, प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष शिवाजीराव कारवाल, प्रदेश सचिव देवीदास परदेसी, प्रदेश महिला अध्यक्ष उषाताई कुमावत, प्रदेश महिला उपाध्यक्ष वन्दना कुमावत, प्रदेश महिला सचिव भारती कुमावत, अर्चना कुमावत, ज्येष्ठ परामर्शदाता रघुनाथ चव्हाण तथा स्वाति ताई बेलदार की उपस्थिति में प्रभुश्रीराम जी की प्रतिमा पूजन व दीप प्रज्ज्वलन के साथ समारोह का शुभारम्भ हुआ। समारोह में 40 से अधिक वरिष्ठ समाजजनों का शॉल एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। कक्षा 5 से 9 तक के मेधावी विद्यार्थियों को 12 नोट बुक देकर सम्मानित किया गया। श्रीमती सुशीला देवी कुमावत की ओर से 12वीं कक्षा में अधिकतम अंक अर्जित करने वाले बालक-बालिकाओं को 5,001 रुपए की राशि शिक्षा सहायतार्थ दी।

द्वितीय सत्र में युवक-युवती परिचय सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमें 500 से अधिक समाजजनों ने भाग लिया। समारोह में श्री मनोहर लाल कुमावत वरिष्ठ पत्रकार तथा श्री विद्याधर मोरवाल पूर्व अध्यक्ष मुम्बई कुमावत समाज के आकस्मिक निधन पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। कार्यक्रम का संचालन प्रदेश सचिव देवीदास भाऊ परदेसी ने किया तथा अन्त में आभार अशोक जी भवरे अध्यक्ष द्वारा दिया गया।

श्री कुमावत समाज विकास संस्था, चौंमू

प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन 18 अगस्त को

जयपुर। श्री कुमावत समाज विकास संस्था चौंमू के तत्वाधान में चौंमू-आमेर-शाहपुरा क्षेत्र के कुमावत समाज के प्रतिभावान छात्र/छात्राओं, खिलाड़ियों एवं विभिन्न प्रशासनिक व राजकीय सेवाओं में चयनित समाज की विशिष्ट प्रतिभाओं का 'प्रतिभा सम्मान समारोह' रविवार 18 अगस्त 2024 को प्रात: 9:00 बजे से श्री गणेश गार्डन, सामोद रोड़,चौंमू में आयोजित किया जाएगा।

समिति के अध्यक्ष मोहनलाल बारावाल व संरक्षक शंकरलाल मामोडिया ने बताया कि वर्ष 2024 में सैंकेण्डरी, सीनियर सेकेण्डरी व इनके समकक्ष परीक्षाओं में 85% एवं अधिक, स्नातक अधिस्नातक परीक्षा 2024 में 75% एवं अधिक अंक अर्जित करने वाले छात्र-छात्राओं का सम्मान किया जाएगा। 5 अगस्त 2024 तक सरकारी सेवाओं में चयनित समाजजनों का सम्मान किया जाएगा। साथ ही खेलकूद एवं अन्य विशिष्ट प्रतिभाओं का भी सम्मान किया जाएगा। अंकतालिका मय एक पासपोर्ट साइज रंगीन फोटो समिति प्रतिनिधि के पास जमा कराने की अंतिम तिथि 5 अगस्त 2024 है।

समिति द्वारा दिनांक 12 नवंबर 2024 देवउठनी एकादशी को सामूहिक विवाह का आयोजन किया जाएगा, जिसमें 51 जोड़ों के विवाह का लक्ष्य रखा गया है।

परिणय सूत्र में बंधे सर्व समाज के 4 जोड़े

मानव जनकल्याण सेवा संस्थान जयपुर आयोजित (नि:शुल्क) सर्व समाज सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन गणपति पैलेस, धावास रोड़, जयपुर में हुआ।

- इस अवसर पर परिणय सूत्र में बंधे सर्व समाज के 4 जोड़े।
- बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत वर वधु को शपथ दिलाई।
- इस अवसर पर वर-वधू को उपहार के रूप में सोने व चाँदी के 5 आभूषण दिये गए।

इसके अलावा दुल्हन के कपड़े (बेस) जोड़े की हाथ की घड़ी, एलसीडी, प्रेस, पंखा, बैड, गद्दा सेट, ड्रेसिंग टेबल, कम्बल, 2 तकिये, बैड शीट, सेन्टर टेबल, 2 कुर्सियाँ, चौकी, 21 बर्तन सेट, बेजीटेबल कटर, दीवार घड़ी, वरमाला, तोरण, थाम आदि उपहार भी दिए गए। आयोजक अमरचंद कुमावत, अध्यक्ष, मानव जनकल्याण सेवा संस्थान ने बताया की इस अवसर पर प्रतिभा सम्मान समारोह का भी आयोजन हुआ।

उन्होंने कहां की बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ मिशन को आगे बढ़ाते हुए 10वीं व 12 वीं परीक्षा में 80% या उससे अधिक अंक अर्जित करने वाले 411 छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया।

वीरांगना काली बाई

स्वतंत्रता से पहले राजस्थान को राजपूताना के नाम से जाना जाता था। इसमें कई छोटी-बड़ी रियासतें थीं। उसने से एक रियासत थी, **डूंगरपुर,** जो वांगड़ क्षेत्र में आती थी। बात है जून 1947 की। इस समय राजपूताना की कई रियासतों में कहने को तो भारतीय राजाओं का राज था किन्तु ये सब ब्रिटिश शासन की अधीनता में थे। इन शासकों ने कर (टैक्स) वसूलने का 'ठेका' लिया था। जिसका मतलब था प्रजा से कर वसूल कर अंग्रेजों तक पहुँचाना। साथ ही सामन्तीराज व्यवस्था के चलते ये शासक निरंकुश हो गये थे। वांगड़ क्षेत्र में भील जनजाति की अच्छी जनसंख्या थी। शिक्षा से वंचित रहने के कारण उन पर हो रहे अत्याचारों को सहन करने के लिए अभिशप्त थे ।

शासन के अत्याचार जब असहनीय हो गए तो विद्रोह की चिनगारियों फूटने लगी। जगह-जगह प्रजामण्डलों (जनता के समूह) की स्थापना होने लगी, जो अत्याचारों के बारे में प्रजा को जाग्रत करने लगे। इनके द्वारा पाठशालाएँ (विद्यालय) खोली गई, जहाँ इन आदिवासियों को शिक्षा दी जाने लगी। वे पढ़ाने के साथ साथ उन्हें अंग्रेजों एवं सामंती द्वारा हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध जाग्रत करते। उन्हें देश के अन्य भागों में चल रहे स्वतंत्रता आन्दोलनों, क्रान्तिकारियों की गाधाएँ सुनाते थे। ऐसी ही एक पाठशाला डूंगरपुर के रास्तापाल में खोली गई। इसके मालिक थे नानाभाई खांट एवं वहाँ के शिक्षक थे सेंगा भाई। काली बाई जो उस समय मात्र 11 वर्ष की थी, उसी पाठशाला में पढ़ती थी। अपने गुरु के प्रति उसके मन में अत्यधिक सम्मान था। उसे आधुनिक एकलव्य कहें तो गलत नहीं होगा।

डूंगरपुर के महारावल एवं अंग्रेज प्रशासन की पाठशालाओं के घोर विरोधी थे। उन्होंने इस पाठशाला को बंद करने का आदेश दिया। जिला मजिस्ट्रेट एवं डी.एस.पी. हथियारों से लैस कुछ सिपाहियों के साथ 19 जून 1947 की पाठशाला बन्द करवाने पहुंचे। एक विद्या के मन्दिर को बंद करवाने के लिए सेना एवं पुलिस हथियार से लैस हो कर गई। पाठशाला के मालिक नानाभाई खांट एवं गुरुजी सेंगाभाई ने इसका पुरजोर विरोध किया। दोनों को बहुत मारा पीटा गया। बन्दूकों की बट से भयंकर मार पड़ने के कारण नानाभाई वही गिर पड़े। सेंगाभाई की कमर से रस्सी बांध दी एवं उस रस्सी के सिरे को ट्रक से बाँध दिया। सिपाहियों से भरा यह ट्रक चल पड़ा उसके साथ ही सेंगाभाई घिसटने लगे। उपस्थित भील इसका विरोध करना चाहते थे, किन्तु हिम्मत नहीं जुटा पाए। उसी समय नन्हीं बालिका काली बाई अपने खेत से घास काटकर लौट रही थी। सिर पर घास का पूला (गट्ठर) एवं हाथ में दाँतली (घास काटने का औजार) थी। यह दृश्य देखकर यह सन्न रह गई। उसके आदरणीय गुरु जी को अत्याचारी सिपाहियों द्वारा घसीटा जा रहा था। ये तो मर जाएंगे उसने सोचा। बिजली की गति से उसके मस्तिष्क में विचार कौंधा, वह चिल्लाते हुए ट्रक के पीछे भागी। 'मत लेऽऽ जाओ रे मेरे गुरू जी को, मत लेऽऽ जाओ रे मेरे गुरु जी को' और देखते ही देखते उसने दांतली से रस्सी को काट दिया। सिपाहियों ने 'आव देखा न ताव उस नन्हीं सी बच्ची पर ताबड़तोड़ गोलियाँ चला दी। उसका बलिदान व्यर्थ नहीं गया। एक बच्ची के साहस ने सभी में हिम्मत का संचार किया। भीलों ने 'मारू ढोल' बजा दिया और लगे सैनिकों पर पथराव करने। मारू ढोल का अर्थ था कि अब सभी भील एकत्र हो जाएं, संघर्ष करना है। बच्चों! संगठन में बहुत शक्ति होती है। 'मारू ढोल' को बजता देख सेंगाभाई को वहीं छोड़ सारे सिपाही भाग गए। तीनों घायलों को तुरन्त चिकित्सालय पहुंचाया गया। जहाँ नानाभाई एवं काली बाई को मृत घोषित कर दिया गया। सेंगाभाई बच गए। उनकी पूरी चिकित्सा की गई। इस घटना के बाद सिपाहियों का साहस नहीं हुआ इस क्षेत्र में फिर से आने का। दो महिने बाद 15 अगस्त 1947 को पूरे देश को स्वतंत्रता मिल गई। आजादी की दास्तान ऐसे ही वीरों से भरी पड़ी है जिनके कारण हम आज स्वतंत्र हैं।

अपना बलिदान देकर जो हजारों दिलों में साहस जगा गई, ऐसी साहसी समर्पित बालिका की प्रतिमा डूंगरपुर के प्रसिद्ध गैप सागर पर स्थापित की गई एवं एक दीर्घा भी उसके नाम पर डूंगरपुर में बनाई गई है ताकि आने वाली पीढ़िया उसे सदा याद रखें व प्रेरणा ले सकें।

संत गरवाजी का मेला सम्पन्न

जैसलमेर के लोद्रवा में कुमावत समाज के संस्थापक संत श्री गरवाजी की पुण्यतिथि 30 जून-1 जुलाई पर वार्षिक मेला एवं सामाजिक सम्मेलन का आयोजन उनकी समाधी स्थल लोद्रवा में सम्पन्न हुआ जिसमें राजस्थान के अलावा निकटवर्ती राज्यों से कुमावत समाजजन पहुंचे। राजूराम अध्यक्ष, अखिल भारतीय संत श्री गरवाजी सेवा समिति ने बताया कि सामाजिक एकता, शिक्षा और भाईचारे की भावना विकसित करने तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए यहां जोर दिया गया। भोजन-प्रसादी की नि:शुल्क व्यवस्था कुमावत सेवा समिति चारणवाला बज्जू, बीकानेर की ओर से, लाईट डेकोरेशन और माईक व्यवस्था देउराम गोगादे, पृथ्वीराज वैडिंग लाईट एवं डेकोरेशन की ओर से चाय, दूध व्यवस्था तथा जल व्यवस्था मोहित व सतीश काठोडी की ओर से की गई। संत श्री 1008 कमल भारती महाराज के सानिध्य में मुकेश कुमावत एवं पार्टी बाड़मेर, खेताराम भटिया एण्ड पार्टी रामगढ़, मांगीलाल दुगट रामदेवरा एण्ड पार्टी, साध्वी सुशीला बीकानेर, महंत भगवान भारती महाराज आदि ने सत्संग एवं भजन का आयोजन किया।

भारतीय कुमावत क्षत्रिय महासभा का अधिवेशन मंदसौर में सम्पन्न

मंदसौर। भारतीय कुमावत क्षत्रिय महासभा का दो दिवसीय अधिवेशन मंदसौर रेवास देवड़ा मार्ग स्थित मनमोहन वाटिका में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन का प्रारम्भ भगवान श्रीराम की छवि के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। सभी सदस्यों ने राष्ट्रीय अध्यक्ष युधिष्ठिर कुमावत की अगुवाई में ध्वज गान किया। मध्यप्रदेश जोन पदाधिकारीगणों ने राष्ट्रीय पदाधिकारियों का स्वागत किया।

बैठक में गत वर्ष 18-19 मार्च 2023 को बैठक में संविधान संशोधन के बिंदुओं को स्वीकृत किया गया। युधिष्ठिर कुमावत ने कहा कि भारतीय कुमावत क्षत्रिय महासभा को अब विराट स्वरूप मिलेगा। महासभा को मजबूत बनाने के उद्देश्य से ही संविधान संशोधन किया गया है। भारतीय कुमावत क्षत्रिय महासभा (रजि.)

मंत्रीमण्डल व राष्ट्रीय कार्यकारिणी की दो दिवसीय बैठक को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष युधिष्ठिर कुमावत ने कहा कि महासभा हमारी मां है, हमें अधिकाधिक सदस्यों को जोडकर समाज को मजबूत बनाना है। संविधान में संशोधन कर नए प्रकोष्ठो के गठन से संगठन को एक नई दिशा मिलेगी।

भारतीय कुमावत क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष युधिष्ठिर कुमावत ने कहा कि यह समय समाज को संगठित करने का समय है। सदस्यता बढाने के साथ ही महासभा में प्रतिनिधित्व भी बढेगा। देश के सातों जोन में समाज को संगठित करने का दायित्व महासभा के साथ सभी सदस्यों का है। भारतीय कुमावत क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री सूरजमल अडानिया ने मंत्री मण्डल का कोरम पूर्ण होने की घोषणा के साथ सदस्यता अभियान व आगामी वर्ष 2025 के राष्ट्रीय व जोन चुनाव पर चर्चा की। बैठक में गत वर्ष राजस्थान के उदयपुर शहर में हुई बैठक के मिनिटस का वाचन संविधान संशोधन समिति समन्वयक हरिशंकर खंडारिया ने किया, जिन्हें सर्वसम्मति से पारित किया गया। सहायक कोषाध्यक्ष दिल्ली के रामकरण वर्मा ने वर्ष 2024-25 का अनुमानित आय-व्यय पर मंथन के बाद अनुमानित बजट प्रस्तुत किया, जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया।

धन्यवाद से पूर्व ज्ञात-अज्ञात दिवंगत समाज बन्धुओं को श्रद्धांजलि के तहत राष्ट्रीय परामर्शदाता मुम्बई निवासी विद्याधर मोरवाल, दक्षिण-पश्चिम राजस्थान जोन अध्यक्ष रमेशचंद्र झालवार, पत्रकार मनोहर कुमावत को दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई। राष्ट्रगान के साथ बैठक का समापन हुआ।

इस दौरान भारतीय कुमावत क्षत्रिय महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नीरज घनेरिया (मध्यप्रदेश), राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ओमप्रकाश बरमुंडा (गुजरात), पूनम अजमेरा (उत्तर-पूर्व राजस्थान), वित्त मंत्री दुर्गालाल बंबोरिया, कार्यालय मंत्री भीमसिंह सिरोहिया, महिला एवं बाल विकास मंत्री पार्वती किरोड़ीवाल, सहायक शिक्षा मंत्री ईश्वर लाल कुमावत, संगठन व प्रचार मंत्री बसंत कुमार दौराया, कानून व सुरक्षा मंत्री इंद्र कुमार बधानिया, शंकरलाल मामोडिया, सहायक कोषाध्यक्ष शिवदयाल धुंधारिया, विक्रमराय अजमेरा, प्रवीण बधानिया, रामकरण वर्मा, जनगणना मंत्री हरिसिंह घटेलवाल, सहायक जन गणना मंत्री दयानंद आर्य, परामर्शदाता अभय मोरवाल, राष्ट्रीय प्रतिनिधि सुलक्षणा नाईक, श्रीकांत विजय परदेशी, विजयानंद परदेशी, रानी बाबूलाल अजमेरा, भैरूलाल मुंडेल, मदनसिंह बाबरवाल, जगदीश मामोडिया, गणेशलाल नराणिया, गिरिराज खनाडिया, नारायणलाल चांदोरा, पिंकी बधानिया, नवलकिशोर बबेरीवाल, छोटीलाल जलिंद्रा, राकेश कुमार मारवाल, मनोज जाखड़, राजेन्द्र वारीवाल, दिलीप गोठवाल, मालीराम कारगवाल, रजनी सिरोहिया सहित मध्यप्रदेश जोन अध्यक्ष लीलाधर दौराया, महामंत्री दिलिप टिकोलिया, अहमदाबाद जोन अध्यक्ष शंकरलाल मेरावंडिया, महामंत्री बालुराम पिलोदिया, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री छोटूराम बड़ीवाल, भरत कुमावत, भंवरलाल सुरास, जगदीश मामोडिया, बालूलाल कुंडलवाल आदि मौजूद रहे।

प्रतिभाओं का किया सम्मान-

मन्दसौर जिला संगठन द्वारा प्रमुख अतिथियों व प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में श्री श्री 1008 महामण्डलेश्वर स्वामी श्री ज्ञानदासजी महाराज (कुलगुरु कुमावत समाज भारत) श्री पंच निर्मोही अड़ी अखाड़ा श्री दादूराम आश्रम, उज्जैन ने बच्चों को अशीर्वाद दिया। जिलाध्यक्ष वर्दीचंद छापरवाल सहित उपाध्यक्ष भरत ऐनीयां, वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजू मून्डेल, महामंत्री राजेश अडानीयाँ, कोषाध्यक्ष मदनलाल अड़ानीयाँ, भरत छापोला, भैरूलाल अन्यावड़ा गोपाल छापोला, बाबु डुंगरवाल सहित परमानंद भदानीया, महेश छापोला, लाला मुंडेल, हरिशंकर माचीवार, सत्यनारायण मण्डलियां, रवी मारिवार, विकाश कडवार, माणक अडानियां, नरेन्द्र माण्डेला, संतोष मुंडेल, राजु नागदा, भोलाशंकर, गोवर्धन कुराड़िया, वर्षा मून्डेल, निशा, कृष्णा डुंगरवाल, भावना टांक आदि ने प्रतिभावान बच्चों को सम्मानित किया। इस दौरान बडी संख्या में समाजबंधु व प्रतिभावान बच्चों के अभिभावक भी मौजूद रहे।

सह सम्पादक जयसिंह गुडीवाल की विशेष रिपोर्ट

सीए परीक्षा में लहराया सफलता का परचम, समाज का नाम किया रोशन

अगर हौसले बुलंद हों तो हर राह आसान हो जाती है। राहों के पत्थर भी आपके लिए रास्ते बनाने लगते हैं। हाल ही में ICAI द्वारा चार्टर्ड एकाउंटेंट फाइनल और इंटरमीडिएट परीक्षाओं के नतीजों की घोषणा की गई । जिसमें समाज की अनेक प्रतिभाएं सामने आई है जिन्होनें चार्टर्ड अकाउंटेंट बनकर समाज को गौरांवित किया है।

चार्टर्ड एकाउंटेंट परीक्षा में सफलता की इबारत लिखने वाले समाज के होनहारों ने अपनी मंजिल को कैसे आसान किया, कैसे मुश्किलों से विचलित नहीं हुए, किस तरह अपना आत्मविश्वास चरम पर रखा, भविष्य में इस परीक्षा की तैयारी करने वाले छात्रों के लिए उनके क्या सुझाव हैं। ऐसे ही कई समाज के गुदड़ी के लालों ने अपनी सफलता की कहानी कुमावत इंडिया पत्रिका के सह सम्पादक जयसिंह गुडीवाल को बताई। कुमावत इंडिया पत्रिका का सदैव प्रयास रहा है कि समाज के ऐसे होनहारों को पत्रिका में स्थान देकर उनकी हौसला अफजाई करे, उनका सम्मान करें। पढिये सफलता की कहानी, उनकी जुबानी-

1. सीए के सिलेबस को बोझ समझेंगे, तो पढ़ाई भी बोझ लगेगी: चेतना कुमावत

(ICAI) द्वारा चार्टर्ड एकाउंटेंट फाइनल और इंटरमीडिएट परीक्षाओं के नतीजों की घोषणा हुई। जिसमें समाज में समय-समय पर अनेक प्रतिभाएं सामने आई है जिनमें से चार्टर्ड अकाउंटेंट बनकर समाज को गौरांवित करने वाली इन्दिरा बाजार, कल्याण जी के रास्ता, जयपुर में रहने वाले यशपाल कुमावत की पुत्री चेतना कुमावत ने चार्टर्ड अकाउंटेंट (सीए) की परीक्षा उत्तीर्ण कर समाज का नाम रोशन किया है। बता दें चेतना कुमावत के पिता यशपाल कुमावत व माता राजाबाला बिर्थला हैं जो कि समाजसेविका हैं। गौरतलब है कि चेतना कुमावत शुरू से ही होनहार छात्रा के रूप में ख्याति प्राप्त की हैं उसकी इस सफलता पर समाज व यशपाल कुमावत के परिवार में हर्ष और खुशी का माहौल है।

चेतना कि सलाह है कि रेगुलर पढ़ाई और मन लगाकर पढ़ाई। चेतना कहती हैं, अगर सीए के सिलेबस को आप बोझ समझेंगे, तो पढ़ाई भी बोझ लगेगी। मेरे लिए सीए की पढ़ाई हमेशा से ही मजा रही। 8 से 10 घंटे मन से पढ़ाई... मेरे लिए ये चुनौतियां तो रहीं, मगर पढ़ाई बोझ नहीं लगी। अपने शौक को अवश्य पूरा करें।

2. फोकस और निरन्तरता से आप अपने लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं : निवेदिता कुमावत

ICAI द्वारा चार्टर्ड एकाउंटेंट फाइनल और इंटरमीडिएट परीक्षाओं के नतीजों में उज्जैन निवासी निवेदिता कुमावत (सोनिया) ने 23 वर्ष की उम्र में प्रथम प्रयास में सीए परीक्षा उत्तीर्ण कर समाज का नाम रोशन किया है। निवेदिता ने लोकमान्य तिलक हायर सैकेण्डरी स्कूल से सीनियर हायर सैकेण्डरी पास की है। निवेदिता के पिता सत्यनारायण कुमावत किसान एवं माता अनुसूया कुमावत गृहणी हैं। निवेदिता अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार और मित्रों को देती है। निवेदिता का कहना है कि फोकस और निरन्तरता से आप अपने लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं।

निवेदिता कहना है कि मैंने अपनी तैयारी एग्जाम से पांच महीने पहले महीने, हफ्ते और दिन के अनुसार की। जो सब्जेक्ट मुझे कुछ कठिन लगे, उनकी तैयारी पहले की। मैंने तैयारी के लिए कैलेंडर का भी सहारा लिया। हर सब्जेक्ट और किताब के लिए एक साथ तारीख तय की। उस तारीख के अनुसार किताब के पेजों को बांटा। नियत समय में जितने पेज और विषय मैं तैयार कर लेती थी, उन्हें कैलेंडर पर टिक कर देती थी। अगर तैयार नहीं हो पाते थे, तो कैलेंडर पर क्रॉस का निशान लगा देती थी और फिर उसकी तैयारी और तेज कर देती थी।

3. उन टॉपिक्स पर ज्यादा ध्यान दें जो आपको कठिन लगे: पवन कुमावत

जयपुर के चौंमू में रहने वाले पवन कुमावत ने वो कर दिखाया है, जो अच्छे से अच्छे लोग नहीं कर पाते हैं उन्होंने ICAI द्वारा सीए परीक्षा में सफलता हासिल की है। उन्होंने बहुत ही कम उम्र 23 साल में सीए का पूरा कोर्स पास कर लिया है। सीए फाइनल परीक्षा में उन्होंने 600 में से 352 अंक हासिल किए हैं। जहां बहुत लोगों को सीए परीक्षा पास करने में सालों साल का समय लग जाता है, वहीं पवन कुमावत ने यह परीक्षा अपने पहले ही प्रयास में पास कर ली। पवन के पिता राकेश कुमावत किसान हैं एवं चाय की दुकान चलाते हैं, माता रामप्यारी देवी गृहणी हैं। पवन अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार को देते हैं।

पवन कुमावत ने बताया कि मैंने 10 से 12 घंटे नियमित मन लगाकर पढ़ाई की है। इस दौरान मैंने प्रत्येक विषय को गहराई से पढ़ा। साथ ही किसी भी प्रकार की समस्या के हल के लिए मित्रों और टीचर की हेल्प ली। आखिरी महीने में उन टॉपिक्स पर ज्यादा ध्यान दिया जो मुझे कुछ हार्ड लगे। अपनी तैयारी के दौरान मैंने सोशल मीडिया से दूरी रखी। हालांकि वॉट्सऐप का मैं इस्तेमाल करता था, लेकिन सिर्फ इतना कि किसी सब्जेक्ट में कोई परेशानी आए तो किसी साथी से उसका हल पूछ सकूं।

सीए परीक्षा में पास होने पर सभी होनहारों %कुमावत इंडिया% पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई और शुभकामनाऐं।

...फोटो कलर पेज पर

रक्षा बंधन पर्व : हमारी समृद्ध विरासत का प्रतीक

जीवन विभिन्न रिश्तों के तानेबाने से बुना एक मधुर गीत है। इस गीत की हर पंक्ति एक अनोखा मधुर रिश्ता है जो जीवन रूपी संगीत को सम्पूर्णता प्रदान करता है। इन रिश्तों की अहमियत को समझ ही हमारे पूर्वजों ने त्योहार व पर्व की ऐसी विरासत हमें प्रदान की जो आज सैकड़ों वर्षों उपरांत भी अपनी समसामयिकता के कारण जन-जन में लोकप्रिय है। प्रत्येक पर्व सिर्फ वो ही नही है जो हमें ऊपरी तौर पर दिखाई देता है। अपने लौकिक स्वरूप के साथ-साथ उसमें अनेक सारगर्भित सन्दर्भ भी निहित होते हैं।

रक्षा बंधन भी एक ऐसा ही उत्सव है जो हमारी अद्भुत सांस्कृतिक विरासत का परिचायक तो है ही साथ ही मानव जीवन के अमूल्य रिश्तों को सहजने व संवारने का भी सुंदर माध्यम है ।

श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाए जाने वाला ये त्योहार भाई-बहन के प्रेम का उत्सव है। भाई-बहन का रिश्ता दुनिया के उन खूबसूरत रिश्तों में से आता है जहाँ प्रेम की निस्वार्थ निर्झरणी निरंतर बहती रहती है। बड़े भाई का सानिध्य जहाँ बहन के लिए एक वट वृक्ष के समान सुरक्षा प्रदान करने वाला होता। वही छोटे भाई का प्रेम बड़ी बहन में सुरक्षा के साथ-साथ ममता के भाव भी उत्पन्न कर देता है। यह रिश्ता बहुत खास होता है, जिस तरह से वह एक-दूसरे की चिंता करते है, उसकी कोई तुलना नहीं की जा सकती है। वे चाहे छोटी-छोटी बातों पर एक-दूसरे से कितना भी लड़ाई-झगड़ा करें, लेकिन फिर भी वह एक-दूसरे के लिए कुछ भी करने से पीछे नहीं हटते है। जन्म से लेकर मृत्य तक चलने वाला ये खून का रिश्ता सभी के जीवन की अमूल्य निधि होता है ।

रक्षा बंधन के दिन बहन अपने भाई के रक्षा सूत्र बाँध उसकी लम्बी उम्र और सलामती के लिए प्रार्थना करती है। रक्षा सूत्र का भी अपना एक इतिहास है। जो उसे पौराणिक काल में ले जाता है। सबसे पहले किसने रक्षा सूत्र बाँध कर इस पवित्र पर्व की शुरुआत की ये तो किसी को नहीं पता लेकिन हमारे पुराणों में अवश्य इसका उल्लेख मिलता है। भविष्य पुराण में वर्णन मिलता है कि देव और दानवों में जब युद्ध शुरू हुआ तब दानव हावी होते नज़र आने लगे। भगवान इन्द्र घबरा कर बृहस्पति के पास गये। वहां बैठी इन्द्र की पत्नी इंद्राणी सब सुन रही थी। उन्होंने रेशम का धागा मन्त्रों की शक्ति से पवित्र करके अपने पति के हाथ पर बाँध दिया। संयोग से वह श्रावण पूर्णिमा का दिन था। लोगों का विश्वास है कि इन्द्र इस लड़ाई में इसी धागे की मन्त्र शक्ति से ही विजयी हुए थे। उसी दिन से श्रावण पूर्णिमा के दिन यह धागा बाँधने की प्रथा चली आ रही है। यह धागा धन, शक्ति, हर्ष और विजय देने में पूरी तरह समर्थ माना जाता है। ये भी कहा जाता है कि राजा बलि ने यज्ञ संपन्न कर स्वर्ग पर अधिकार का प्रयत्न किया, तो देवराज इंद्र ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की। विष्णु जी वामन ब्राह्मण बनकर राजा बलि से भिक्षा मांगने पहुंच गए। गुरु के मना करने पर भी बलि ने तीन पग भूमि दान कर दी। वामन भगवान ने तीन पग में आकाश, पाताल और धरती नाप कर राजा बलि को रसातल में भेज दिया। उसने अपनी भक्ति के बल पर विष्णु जी से हर समय अपने सामने रहने का वचन ले लिया। लक्ष्मी जी इससे चिंतित हो गई। नारद जी की सलाह पर लक्ष्मी जी बलि के पास गई और रक्षासूत्र बांधकर उसे अपना भाई बना लिया। बदले में वे विष्णु जी को अपने साथ ले आई। उस दिन श्रावण मास की पूर्णिमा तिथि थी।

महाभारत में श्री कृष्ण और द्रौपदी की कहानी प्रसिद्ध है, जिसमें जब कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का वध किया तब उनकी तर्जनी में चोट आ गई। द्रौपदी ने उस समय अपनी साड़ी फाड़कर उनकी उँगली पर पट्टी बाँध दी, और इस उपकार के बदले श्री कृष्ण ने द्रौपदी को किसी भी संकट में द्रौपदी की सहायता करने का वचन दिया था और उसी के चलते कृष्ण ने इस उपकार का बदला बाद में चीरहरण के समय उनकी साड़ी को बढ़ाकर चुकाया। कहते हैं परस्पर एक दूसरे की रक्षा और सहयोग की भावना रक्षाबन्धन के पर्व में यहीं से प्रारम्भ हुई।

रक्षा बंधन पर्व का भाई-बहन दोनों को ही सालभर से इंतजार रहता है। इसकी तैयारी कुछ दिन पहले से ही प्रारम्भ हो जाती है। बाजार सुंदर-सुंदर राखियों से सज जाते हैं। बहनें अपने भाइयों के लिए मनपसंद राखियाँ, मिठाई और नारियल खरीद कर लाती है। रक्षाबन्धन के दिन प्रातः स्नानादि करके लड़कियाँ और महिलाएँ पूजा की थाली सजाती हैं। थाली में राखी के साथ रोली या हल्दी, चावल, दीपक, मिठाई, फूल और भी होते हैं। सभी भाई तैयार होकर टीका करवाने के लिये पूजा या किसी उपयुक्त स्थान पर बैठते हैं। पहले अभीष्ट देवता की पूजा की जाती है। कई जगह घर के द्वार के बाहर श्रवणकुमार का चित्र लगा उस पर राखी व मीठा लगा शगुन की पूजा की जाती है। इसके बाद रोली या हल्दी से भाई का टीका करके चावल को टीके पर लगाया जाता है और सिर पर फूलों को छिड़का जाता है, उसकी आरती उतारी जाती है और दाहिनी कलाई पर राखी बाँधी जाती है। भाई बहन को उपहार या धन देता है। इस प्रकार रक्षाबन्धन के अनुष्ठान को पूरा करने के बाद ही भोजन किया जाता है। प्रत्येक पर्व की तरह उपहारों और खाने-पीने के विशेष पकवानों का महत्त्व रक्षाबन्धन में भी होता है। आमतौर पर दोपहर का भोजन महत्त्वपूर्ण होता है और रक्षाबन्धन का अनुष्ठान पूरा होने तक बहनों द्वारा व्रत रखने की भी परम्परा है। यह पर्व भारतीय समाज में इतनी व्यापकता और गहराई से समाया हुआ है कि इसका सामाजिक महत्त्व तो है ही, धर्म, पुराण, इतिहास, साहित्य और फिल्में भी इससे अछूते नहीं हैं।

इस त्योहार का ऐतिहासिक महत्व भी है। रक्षा सूत्र ने अनेकों बार एक रक्षा कवच के रूप में मातृभूमि की सुरक्षा का दायित्व भी निभाया है। राजपूत जब लड़ाई पर जाते थे तब महिलाएँ उनको माथे पर कुमकु तिलक लगाने के साथ-साथ हाथ में रेशमी धागा भी बाँधती थी। इस विश्वास के साथ कि यह धागा उन्हें विजयश्री के साथ वापस ले आयेगा। राखी के साथ एक और प्रसिद्ध कहानी जुड़ी हुई है। कहते हैं, मेवाड़ की रानी कर्मावती को बहादुरशाह द्वारा मेवाड़ पर हमला करने की पूर्व सूचना मिली। रानी लड़ने में असमर्थ थी अत: उसने मुगल बादशाह हुमायूँ को राखी भेज कर रक्षा की याचना की। हुमायूँ ने मुसलमान होते हुए भी राखी की लाज रखी और मेवाड़ पहुँच कर बहादुरशाह के विरूद्ध मेवाड़ की ओर से लड़ते हुए कर्मावती व उसके राज्य की रक्षा की।

एक अन्य प्रसंगानुसार सिकन्दर की पत्नी ने अपने पति के हिन्दू शत्रु पुरूवास (पोरस) को राखी बाँधकर अपना मुँहबोला भाई बनाया और युद्ध के समय सिकन्दर को न मारने का वचन लिया। पुरूवास ने युद्ध के दौरान हाथ में बँधी राखी और अपनी बहन को दिये हुए वचन का सम्मान करते हुए सिकन्दर को जीवन-दान दिया।

महाभारत में भी इस बात का उल्लेख है कि जब ज्येष्ठ पाण्डव युधिष्ठिर ने भगवान कृष्ण से पूछा कि मैं सभी संकटों को कैसे पार कर सकता हूँ तब भगवान कृष्ण ने उनकी तथा उनकी सेना की रक्षा के लिये राखी का त्योहार मनाने की सलाह दी थी। उनका कहना था कि राखी के इस रेशमी धागे में वह शक्ति है जिससे आप हर विपदा से मुक्ति पा सकते हैं।

इस त्योहार ने साहित्य में भी अपनी जगह बनाई है। साहित्य वैसे भी समाज का दर्पण होता है। तो रिश्तों की खुशबू से सुवासित यह त्योहार रचनाकारों की दृष्टि से कैसे अछूता रह सकता था। अनेक साहित्यिक ग्रन्थ ऐसे हैं जिनमें रक्षाबन्धन के पर्व का विस्तृत वर्णन मिलता है। इनमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण है हरिकृष्ण प्रेमी का ऐतिहासिक नाटक रक्षाबन्धन जिसका 1991 में 18वाँ संस्करण प्रकाशित हो चुका है। मराठी में शिन्दे साम्राज्य के विषय में लिखते हुए रामराव सुभानराव बर्गे ने भी एक नाटक की रचना की जिसका शीर्षक है राखी उर्फ रक्षाबन्धन। साहित्य ही नहीं अनेक फिल्में व फिल्मी गाने भी इस त्योहार के इर्दगिर्द बुने गए हैं। पचास और साठ के दशक में रक्षाबन्धन हिंदी फिल्मों का लोकप्रिय विषय बना रहा। ना सिर्फ 'राखी' नाम से बल्कि 'रक्षाबन्धन' नाम से भी कई फिल्में बनायीं गयीं। 'राखी' नाम से दो बार फिल्म बनी, एक बार सन 1949 में, दूसरी बार सन 1962 में, सन 62 में आई फिल्म को ए. भीमसिंह ने बनाया था, कलाकार थे अशोक कुमार, वहीदा रहमान, प्रदीप कुमार और अमिता। इस फिल्म में राजेंद्र कृष्ण ने शीर्षक गीत लिखा था- ''राखी धागों का त्यौहार''। सन 1972 में एस. एम. सागर ने फिल्म बनायी थी 'राखी और हथकड़ी' इसमें आर. डी. बर्मन का संगीत था। सन 1976 में राधाकान्त शर्मा ने फिल्म बनाई 'राखी और राइफल'। दारा सिंह के अभिनय वाली यह एक मसाला फिल्म थी। इसी तरह से सन 1976 में ही शान्तिलाल सोनी ने सचिन और सारिका को लेकर एक फिल्म 'रक्षाबन्धन' नाम की भी बनायी थी। गीतों की तो एक मधुर श्रृंखला हमें नजर आती है जहाँ भाई-बहन के प्रेम को इस त्योहार के माध्यम से बहुत ही सुंदर रूप में रचा गया है। ''बहना ने भाई की कलाई में प्यार बाँधा है'', ''भैया मोरे राखी के बंधन को निभाना'', ''रंग-बिरंगी राखी लेकर'' आदि ऐसे अनेक गीत है जो रक्षाबन्धन की मिठास से परिपूर्ण है और आज भी कानों में मधुर रस घोलते हैं।

राखी का यह त्योहार अपने सामाजिक परिदृश्य के कारण अत्यंत महत्वपूर्ण है। रक्षाबन्धन आत्मीयता और स्नेह के बन्धन से रिश्तों को मज़बूती प्रदान करने का पर्व है। यही कारण है कि इस अवसर पर न केवल बहन भाई को ही अपितु अन्य सम्बन्धों में भी रक्षा (या राखी) बाँधने का प्रचलन है। गुरु शिष्य को रक्षासूत्र बाँधता है तो शिष्य गुरु को। भारत में प्राचीन काल में जब स्नातक अपनी शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात गुरुकुल से विदा लेता था तो वह आचार्य का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उसे रक्षासूत्र बाँधता था जबकि आचार्य अपने विद्यार्थी को इस कामना के साथ रक्षासूत्र बाँधता था कि उसने जो ज्ञान प्राप्त किया है वह अपने भावी जीवन में उसका समुचित ढंग से प्रयोग करे ताकि वह अपने ज्ञान के साथ-साथ आचार्य की गरिमा की रक्षा करने में भी सफल हो। इसी परम्परा के अनुरूप आज भी किसी धार्मिक विधि विधान से पूर्व पुरोहित यजमान को रक्षासूत्र बाँधता है और यजमान पुरोहित को। इस प्रकार दोनों एक दूसरे के सम्मान की रक्षा करने के लिये परस्पर एक दूसरे को अपने बन्धन में बाँधते हैं। इस पवित्र दिन सामूहिक रूप से यज्ञोपवीत परिवर्तित कर नए यज्ञोपवीत पहनने की भी परम्परा रही है।

हिन्दू धर्म सदैव अहं से निकल वयं की ओर उन्मुख रहा है। हमारे पर्व, त्योहार हमें जीवन को समग्रता से जीने का संदेश देते हैं। रक्षाबन्धन हमारी समृद्ध विरासत की वह महत्वपूर्ण कड़ी है जो व्यक्ति को अकेलेपन और तनाव के दलदल में जाने से रोक एक प्रसन्न और स्वस्थ सामाजिक जीवन जीने की दिशा दिखाती है। यह पर्व सामाजिक और पारिवारिक एकबद्धता या एकसूत्रता का सांस्कृतिक उपाय रहा है। विवाह के बाद बहन पराये घर में चली जाती है। इस बहाने प्रतिवर्ष अपने सगे ही नहीं अपितु दूरदराज के रिश्तों के भाइयों तक को उनके घर जाकर राखी बाँधती है और इस प्रकार अपने रिश्तों का नवीनीकरण करती रहती है। दो परिवारों का और कुलों का पारस्परिक योग (मिलन) होता है। यह पर्व हमारे समाज में महिलाओं की भूमिका को भी मजबूती प्रदान करता है। पुत्र की चाह रखने वाले इस पुरुष प्रधान समाज को पुत्री का महत्व समझाता है। आज के इस युग में जहाँ कन्याओं को गर्भ में ही मार दिया जाता है। ये त्योहार हमारे जीवन में एक पुत्री, बहन की महती भूमिका को अंगीकार कर उनकी सुरक्षा को सुनिश्चित करने का संदेश भी देता है। अत: भाई-बहन के स्नेह से परिपूर्ण यह रक्षाबन्धन का पर्व मानव जीवन की एक महत्वपूर्ण धाती है।

- डॉ प्रिया मारवाल, Assist. Professor

मानव शरीर में ऊर्जा के केन्द्र है चक्र

प्राचीन काल के ग्रंथों से ज्ञात होता है कि चक्रों की उत्पत्ति प्राचीन हिंदू और बौद्ध परंपराओं से हुई है। चक्र मानव शरीर के भीतर मौजूद ऊर्जा के केंद्र हैं। हमारे पूरे शरीर में सात चक्र होते हैं जो हमारी रीढ़ की हडडी के आधार से शुरू होकर हमारे सिर के शीर्ष तक जाते हैं। प्रत्येक चक्र की अपनी अलग कंपन आवृत्ति होती है और ये प्रत्येक चक्र शरीर में विशिष्ट कार्यों को नियंत्रण करते हैं। ये चक्र हमारे शरीर के रोगों के प्रतिरोध से लेकर भावनात्मक प्रसंस्करण तक हर चीज को प्रभावित कर सकते हैं।

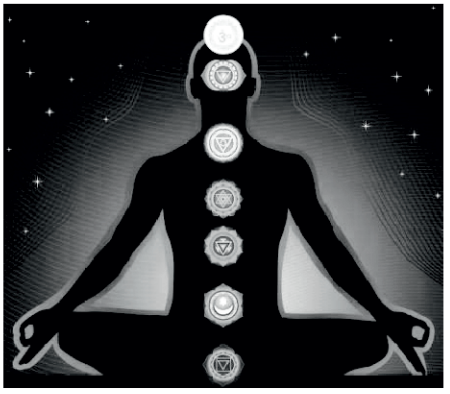

इन दिनों उपचार की रेकी हीलिंग उपचार लोकप्रिय हो रहा है जिसमें इन चक्रों को बिना दवा के संतुलित व ऊर्जान्वित किया जाता है।

आईये, जाने शरीर के इन 7 चक्रों के बारे में :-

1- **मूलाधार चक्र** : मूलाधार या मूल चक्र मनुष्य की प्रवृत्ति, सुरक्षा, अस्तित्व और मौलिक क्षमता से संबंध रखता है। यह चक्र शरीर के उस भाग में होता है जो बैठने पर भूमि से सम्पर्क में आता है। ऐसा माना जाता है कि जब किसी मनुष्य का अस्तित्व खतरे में होता है, तो मरने या मारने का दायित्व इसी चक्र का होता है।

2- **स्वाधिष्ठान चक्र** : स्वाधिष्ठान चक्र, मूलाधार चक्र से ऊपर किन्तु नाभी से नीचे के भाग में होता है। स्वाधिष्ठान चक्र आमतौर पर किडनी व गर्भाशय तंत्र से संबंधित माना जाता है। इसे संतुलित व ऊर्जावान करने से इनसे जुडी बीमारियों का निदान हो सकता है।

3- **मणिपुर चक्र** : मणिपुर चक्र, नाभि स्थान पर होता है तथा पाचन तंत्र से संबंधित होता है। इस चक्र के संतुलन व ऊर्जावान करने से उदर व पाचनक्रिया सुचारु होती है तथा खाद्य पदार्थों को ऊर्जा के रूप में रूपांतरित करने में सहायता मिलती है।

4- **अनाहत चक्र** : अनाहत या अनाहतपुरी चक्र का संबंध मनुष्य के हृदय व फेफड़ों से होता है। इसको संतुलित व ऊर्जान्वित करने से शरीर के इन भाग से सम्बन्धित समस्याओं का निवारण हो सकता है।

5- **विशुद्ध चक्र** : विशुद्धि चक्र मनुष्य के गले में स्थित होता है ये चक्र मनुष्य की थायराइड गन्थि को नियंत्रित करने का काम करता है। यह संप्रेषण को नियंत्रित करता है।

6- **आज्ञा चक्र** : आज्ञा चक्र मनुष्य की दोनों भौहों के मध्य में स्थित होता है। आज्ञा चक्र बुद्धि और स्पष्टता का केन्द्र होता है। इससे नाड़ी तंत्र पूर्णत: जाग्रत, स्वस्थ एवं सशक्त हो जाता है। साधक को सर्वोच्च चेतना व समाधी का अनुभव होता है। मानसिक रूप से आज्ञा चक्र मनुष्य की दृश्य क्षमता के साथ जुड़ा होता है और भावनात्मक रूप से शुद्धता के साथ सहज ज्ञान के स्तर से जुड़ा होता है। इसे संतुलन व ऊर्जावान करने पर व्यक्ति अपने लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित कर सकता है।

7- **सहस्त्रार चक्र** : सहस्त्रार चक्र को मनुष्य के शरीर में शुद्ध चेतना का चक्र माना जाता है। यह हमारे मस्तिष्क के ऊपर की ओर स्थित होता है। ये चक्र आंतरिक बुद्धि से जुड़ा होता है तथा इसे संतुलित व ऊर्जावान करने पर यह चक्र जाग्रत हो जाता है तथा वह व्यक्ति आध्यात्म और ब्रह्माण्ड से जुडने की सामर्थ्य प्राप्त कर सकता है।

- शोभिका कुमावत

कुमावत कलर्स एंड हार्डवेयर गैलेरी का शुभारम्भ

जयपुर स्थित मानसरोवर के रजत पथ पर आदित्य बिड़ला ओपस पेंट के कुमावत कलर्स एंड हार्डवेयर गैलेरी का उद्घाटन किया गया। मुख्य अतिथि भाजपा ओबीसी मोर्चा, जयपुर शहर के जिलाध्यक्ष चेतन कुमावत व प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव मुकेश वर्मा ने फीता काटकर किया। मुख्य अतिथियों का राजस्थानी परम्परा के अनुसार साफा, माला व दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया गया।

गैलेरी के संचालक कमल कुमावत व ट्विंकल कुमावत ने बताया कि आदित्य बिड़ला ग्रुप ओपस पेंट की जयपुर में यह पहली गैलेरी है जहां रंगों से लेकर विचारों और त्वरित सेवा और सलाह से लेकर सभी प्रकार के 'बिड़ला ओपस' ब्रांड, सजावटी पेंट, वॉल पेंट कलर्स, इंटीरियर पेंट्स, एक्सटीरियर पेंट्स, वुड पेंट्स, कार पेंट्स और सहायक सामग्री आपको अपने प्रोजेक्ट के लिए आवश्यक सभी चीजें यहां मिलेंगी साथ ही हार्डवेयर की विस्तृत रेंज भी उपलब्ध होगी। कुमावत ने कहा कि ग्राहकों को बेहतर सेवा देना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता रहेगी। हम अपने ग्राहकों के विश्वास को बनाए रखने के लिए पूरी तरह से कृतसंकल्प हैं।

मुख्य अतिथि चेतन कुमावत ने कहा कि 'बिड़ला ओपस' नाम आदित्य बिड़ला ब्रांड के प्रति विश्वास को दर्शाता है, उसी विश्वास पर कुमावत कलर्स एंड हार्डवेयर गैलेरी खरी उतरेगी। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सचिव मुकेश वर्मा ने कहा कि बेहतर गुणवत्ता और निरंतरता इस गैलेरी द्वारा उपभोक्ताओं को दी जायेगी। यह गैलेरी बेहतर क्वालिटी, ओरिजिनेलिटी तथा बेहतर सेवा का वादा करती है।

इस अवसर पर बिरला ग्रुप से रूपम अग्रवाल जोनल सेल्स मैनेजर, सुमित नागपाल रीजनल सेल्स मैनेजर, अनुराग फ्रेंचाइजी सेल्स मैनेजर, राज ब्लॉक्स के चेतन बालोदिया, सुनील बालोदिया, रवि बालोदिया, मोहन कुमावत, डॉ. ओ.पी. बालोदिया, जयसिंह गुडीवाल, जयपुर के मशहूर सिंगर मोहन कुमार बालोदिया, राकेश सोनी, पीयूष कुमावत व संदीप कुमावत मौजूद थे।

भारत में 50 प्रतिशत वयस्क निष्क्रिय जीवन शैली के शिकार

वर्ष 2000 से 2022 तक स्वास्थ्य जनरल 'द लैंसेट' की रिपोर्ट को माने तो भारत की 49.4 प्रतिशत वयस्क जनसंख्या निष्क्रिय जीवनशैली के खतरनाक स्तर तक पहुंच चुकी है। इसमें से महिलाएं 57 प्रतिशत तथा पुरुष 42 प्रतिशत अनफिट बताये गये हैं। यह आंकड़ा वर्ष 2000 में 22.3 प्रतिशत तथा वर्ष 2010 में 34 प्रतिशत था। यदि यह स्थिति नहीं सुधरी तो वर्ष 2030 तक यह 60 प्रतिशत होना सम्भावित है।

यदि हम विश्व स्तर पर देखें तो यह आंकड़ा 31 प्रतिशत है तथा 1.8 अरब लोग निष्क्रिय हैं। 195 देशों में भारत का स्थान 12वां है। भारत की स्थिति पड़ौसी बांग्लादेश, भूटान, नेपाल आदि से भी खराब है। ये आंकड़े चौंकाने वाले हैं। हमें गम्भीरता से सोचना होगा कि यह स्थिति कैसे आई ? इसके निवारण के उपायों पर भी ध्यान देने की जरूरत है।

सक्रियता के मानदण्ड क्या हैं ? : विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार सप्ताह में 2:30 घण्टे मध्यम व्यायाम या 1:15 घण्टे तेज गति से व्यायाम करना चाहिये। जो इतना व्यायाम नहीं करते वह शारीरिक रूप से निष्क्रिय माने जाते हैं।

निष्क्रियता के प्रभाव : निष्क्रियता से व्यक्ति का लीवर फैटी होने की समस्या, मोटापा, डायबिटीज, उच्च रक्तचाप, हार्ट स्ट्रॉक, डिमेशिया, कैंसर जैसी बीमारियां होने की सम्भावना बढ़ जाती है। भारत में वर्ष 2021 में डायबिटीज से 10.1 करोड़ तथा उच्च रक्तचाप से 31.5 करोड़ लोग पीड़ित थे और यह संख्या निरन्तर बढ़ रही है (इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल साइंस रिपोर्ट अनुसार)। ये जीवनशैली से जुड़ी समस्या है, जिनका निदान दवाइयां नहीं बल्की शारीरिक सक्रियता बढ़ाना है।

ऐसा क्यों हुआ : आधुनिक जीवनशैली में मशीनीकरण व ऑटोमेशन का उपयोग बढ़ा। इन्टरनेट और मोबाईल फोन के साथ दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं घर पर ही डिलीवर होने लगी। लोग मोबाइल फोन पर गेम्स खेलने, सोशल मीडिया पर व्यस्त रहने लगे। कोविड-19 के दौरान व उसके बाद वर्क फ्रॉम होम ने स्थिति को और अधिक बिगाड़ दिया। टेलीविजन पर सीरियलों की भरमार ने महिलाओं को टी.वी. देखने को बाध्य कर दिया। शहरों में मल्टी स्टोरी बिल्डिंगस में तथा ऑफिसों में लिफ्ट का उपयोग भी फिजीकल एक्सरसाईज में बाधक बना। वहीं ओला व उबर जैसी कैब सर्विस डोर-टू-डोर सुविधा दे रही है। ग्रोसरी हो या गारमेंट्स या अन्य वस्तुएं मोबाईल के एक क्लिक पर उपलब्ध हैं। जब इन छोटे-छोटे कामों के लिए भी लोग घर से बाहर निकट ही पैदल नहीं जायेंगे तो फिजीकल एक्सरसाईज कैसे होगी ? बड़े-बड़े शहरों में तो नाश्ता, खाना आदि जोमेटो व स्वीगी जैसे एप से मंगवाया जा रहा है तथा रोज-रोज खाना बनाने को लोग झंझट मान बैठे हैं। लोग फास्ट फूड का सेवन भी ज्यादा करने लगे हैं। खाने की गुणवत्ता की जगह स्वाद व सुविधा को महत्व देना प्राथमिकता हो गया है। मिलावटी व अनहैल्दी खाद्य पदार्थ हमें नुकसान पहुँचा रहा है।

सुझाव : विशेषज्ञों का कहना है कि हमें प्रकृति के साथ चलना चाहिये। रात को जल्दी सोयें व सुबह जल्दी उठे, घूमने जायें, व्यायाम व योगा करें, आसपास आने जाने में पैदल चलें या साईकिल का उपयोग करें। ज्यादा ऊंचाई नहीं हो तो लिफ्ट का प्रयोग न कर सीढ़ियों से जायें। फास्टफूड व बाहर का खाना के बजाए घर पर खाना बनाकर खायें तथा मिलावटी व अनहैल्दी खाने से बचें। मीठी चीजों का सेवन कम करें, चीनी के बजाए गुड या शहद का प्रयोग स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। मैदा के बजाए मल्टीग्रेन आटा व मोटा अनाज (रागी, ज्वार, बाजरा, मक्का आदि) का उपयोग करें। जीवन शैली में बदलाव करते हुए छोटे-मोटे घर के काम व खरीदारी स्वयं जाकर करें। सबसे जरूरी है इन्टरनेट, मोबाईल फोन व सोशल मीडिया पर कम सक्रिय रहें और इसके दुष्प्रभावों से बचें। जो काम मशीन व ऑटोमेशन के बिना किये जा सकते हैं उन्हें इनके बिना उपयोग करने की आदत डालें। हमारे बुजुर्ग जो 60 वर्ष से अधिक आयु के हैं उनमें फिजीकल एक्टीविटी कम हो रही है। उन्हें चाहिये कि पेड़-पौधों में पानी दें व अपने काम खुद ही करने का प्रयत्न करें। इन बदलावों को देखकर बच्चें भी प्रेरित होंगे तथा हम उन्हें भी बाहर खेलने व घूमने को कहें।

लेखक का कहना है कि कुमावत समाज भी इस समस्या से अछूता नहीं है। हम निष्क्रियता की ओर जाने के खतरे को पहचानें और अभी से जीवनशैली में बदलाव लाकर अपने व अपने परिवार को सक्रियता की ओर मोड़ें। हम आराम पसंद नहीं बल्की फिजीकली एक्टिव रहें। ध्यान रहे समस्या से बचाव ही उसका निदान है। आइये, हम सक्रिय व स्वस्थ समाज बनाने में अपना योगदान दें।

- रमेश गैदर

देश हमारा, सबसे न्यारा, प्यारा हिन्दुस्तान

ऊँचे-ऊँचे पर्वत सुन्दर, अपने पहरेदार।
जल से सदा भरी हैं नदियाँ, देश बना गुलज़ार।
झरने गाते गीत मनोहर, सुन्दर मीठी तान।
रंग-बिरंगे पंखों वाले, पक्षी करें कलोल।
मोर, पपीहा, तोता, कोयल बोलें मीठे बोल।
हम भी इनके स्वर में स्वर भर, करें देश गुणगान।
बारी-बारी आते मौसम, नया रंग हैं लाते
गेहूँ, चना, धान, मक्का के खेत खूब लहराते।
फल-फूलों के बाग बगीचे, धरती की हैं शान।

सीताजी की उदारता का प्रेरक प्रसंग

'**आनन्द रामायण**' के छठे सर्ग की बात है। एक दिन सीताजी श्रीरामजी से बोली हे राघव! आज मेरी इच्छा है कि मैं आपके साथ इस श्रेष्ठ महल की छत में स्थित होकर अयोध्यानगरी के बाजार के कौतुक को देखूँ। सीताजी की इस अभिलाषा को देखकर श्रीराम शीघ्र ही सीता के साथ भवन के उस स्थान पर जाकर एक दिव्य आसन पर विराजमान हो गये जहां से कि राजमार्ग का दृश्य स्पष्ट दिखाई देता था। श्रीराम अत्यन्त प्रसन्नता से अपने दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली से संकेत करते हुए सीताजी को बाजार का दृश्य दिखाने लगे। इसी बीच सीताजी ने देखा कि एक ब्राह्मणी अलंकारों तथा वस्त्रों से रहित होकर अपने कटिदेश में छोटे से बालक को लिये हुए राजमार्ग से गुजर रही है। वह अत्यन्त दुर्बल शरीरवाली है। उसे देखकर प्रतीत होता है कि वह भिक्षा माँगने के लिये बाजार में आई हुई है। उस स्त्री की वैसी दुर्दशा देखकर सीताजी ने तुरन्त अपनी एक सेविका को वहां बुलाया और उस स्त्री को अपने पास लाने को कहा। उस स्त्री के आने पर सीताजी ने उससे पूछा-'तुम आभूषणों आदि से रहित क्यों हो ? ऐसे मलिन और फटे हुए थोड़े से वस्त्रों को तुमने क्यों पहन रखा है और ऐसी दशा में तुम यहाँ बाजार में किसलिये घूम रही हो ?' उस ब्राह्मणी ने उत्तर दिया-'हे सीते! मेरे पति मुझे घर में अकेली छोड़कर तीर्थयात्रा के लिये चले गये हैं। मैं अपने पिता की अत्यन्त प्रिय थी, अत: मैं अपने पिता के घर चली आयी, किन्तु वे भी वृद्धावस्था होने से मृत्यु को प्राप्त हो गये हैं। मेरे दो भाई हैं, किन्तु वे अवन्तिकापुरी में गुरुजी के घर में ही रहते हैं। अत: इस समय घर में कोई भी नहीं है, जो मेरा तथा मेरे बच्चे का पालन-पोषण कर सके। इसी कारण हे जनकात्मजे! मेरे पास न तो वस्त्र हैं और न कोई आभूषण ही हैं, फिर मैं कहाँ से पहनूँ?'

उस स्त्री की ये बातें सुनकर सीताजी ने एक बार श्रीराम की ओर देखा, मानों वे उनसे मूक अनुमति माँग रही हों। फिर उन्होंने तत्काल अपने आभूषणों तथा अलंकारों को उतारा और वस्त्र सहित उन आभूषणों को उसे दे दिया। फिर वे उस ब्राह्मणी से बोली-'हे देवी! तुम अभी लक्ष्मण के पास चली जाओ और उनसे मेरे आज्ञानुसार एक लाख स्वर्णमुद्राओं को ग्रहण कर लो।' 'जो आज्ञा' कहकर वह सीताजी की अनुमति प्राप्त कर लक्ष्मण जी के पास चली गई। इधर जानकी जी ने पहले की भाँति पुन: आभूषण और सुवर्ण के तारों से जड़ित दिव्य वस्त्रों को धारण कर लिया।

ब्राह्मणी ने लक्ष्मणजी के पास जाकर सीताजी द्वारा कही बात उन्हें बताई। तब लक्ष्मणजी ने भी उसे एक लाख स्वर्ण मुद्राएं प्रदान कर दीं। उन्होंने उस ब्राह्मणी के वचनों को असत्य नहीं माना, क्योंकि रामजी के राज्य में कौन ऐसा है जो झूठ बोलने का साहस कर सके। तदन्तर सीताजी ने लक्ष्मण के पास एक सेविका भेजकर यह संदेश कहलवाया, 'हे लक्ष्मण! तुम मेरी आज्ञा से अयोध्यापुरी में, सम्पूर्ण राष्ट्र में सातों द्वीपों में तथा केतुमाला, रमणक, भारतवर्ष आदि में दुंदुभी पिटकर यह घोषणा करवा दो कि यदि मेरे गुप्तचरों द्वारा मुझे यह ज्ञात होगा कि अमुक देश अथवा अमुक नगर में अमुक स्त्री-पुरुष उत्तम-उत्तम आभूषणों तथा सुन्दर वस्त्रों से रहित हैं तो वहां का राजा मेरे द्वारा दण्डनीय होगा, विशेष रूप से वह श्रीराम के द्वारा दण्ड प्राप्त करेगा। मेरी इस आज्ञा को जानकर सभी राजाओं को चाहिये कि वे अपने राजकोष के धन से सभी वर्णों के स्त्री-पुरुषों तथा बालकों के लिये सुन्दर-सुन्दर वस्त्र तथा उत्तम आभूषण बनवाकर उन्हें भली-भांति सुसज्जित करवा दें।' सीताजी की उक्त आज्ञा को हाथी के समान घोष करने वाली दुंदुभी के निनाद के माध्यम से सुन-सुनकर सातों द्वीपों के राजाओं ने अपनी समस्त प्रजा को उत्तम वस्त्र एवं आभूषणों से मंडित करवा दिया। तब से सीताजी के भय से सारे जगत में ऐसा कोई स्त्री अथवा पुरुष नहीं था, जो भली भाँति सुसज्जित न हो। इस प्रकार से देवी सीता ने भूमि पर अवतार लेकर प्रसन्नतापूर्वक अनेक कोतुहलपूर्ण कार्य किये।

-देवेश कुमावत, सॉफ्टवेयर इंजीनियर, उज्जैन

रसोई से

नारियल की चटनी

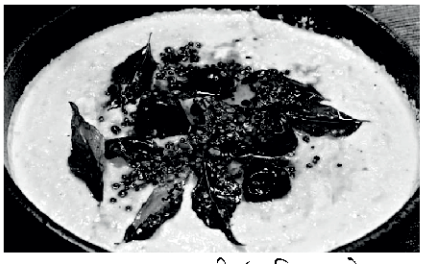

सामग्री: ताजा नारियल - 1 कप (कटा हुआ), हरी मिर्च - 2/3 (स्वादानुसार), अदरक - 1 इंच का टुकड़ा, लहसुन - 2/3 कलियों (वैकल्पिक), भुना हुआ चना दाल 2 बड़े चम्मच, दही 2 बड़े चम्मच (वैकल्पिक), नमक - स्वादानुसार, पानी आवश्यकतानुसार, धनिया पत्ती थोड़ी (वैकल्पिक), तड़के के लिए तेल - बड़ा चम्मच, राई (सरसों के दाने) -1 चम्मच, करी पत्ते - 8/10, सूखी लाल मिर्च - 1/2 चम्मच, हींग - एक चुटकी, बनाने की विधि

चटनी तैयार करना - मिक्सर जार में कटा हुआ नारियल, हरी मिर्च, अदरक, लहसुन, भुना हुआ चना दाल, दही (यदि उपयोग कर रहे है), नमक और थोड़ा पानी डालें इन्हें बारीक पीस लें। यदि चटनी बहुत गाढ़ी हो तो थोड़ा और पानी डालकर अपनी पसंद के अनुसार स्थिरता प्राप्त करें तैयार चटनी को एक बाउल में निकाल लें।

तड़का लगाना - एक छोटे पैन में तेल गरम करें, तेल गरम होने पर उसमें राई डालें। जब राई चटकने लगे, तो करी पत्ते, सूखी लाल मिर्च और हींग डालें कुछ सेकंड तक तड़का दें और फिर इसे तुरंत तैयार चटनी के ऊपर डालें।

परोसना - नारियल की चटनी को इडली, डोसा, वड़ा, या किसी भी दक्षिण भारतीय व्यंजन के साथ परोसें हमारी स्वादिष्ट नारियल की चटनी तैयार है इसे बनाकर ट्राई कीजिए

गायों की होती दुर्दशा ...

मां के दर्जे वाली गाय की आज दुर्दशा बढ़ती जा रही है। इसके लिए आखिर कौन जिम्मेदार है, यह प्रश्न सभी के सामने है। हम इसके लिए बड़ी आसानी से एक-दूसरे पर दोषारोपण तो कर देते हैं, लेकिन खुद क्या कर रहे हैं इसके बारे में कभी नहीं सोचते। जहां शहर में लोग दूध के लिए गाय पालते तो हैं लेकिन दूध दोहने के बाद उसे सड़क पर आवारा घूमने के लिए छोड़ देते हैं। यही स्थिति गांव में किसान की है। वह भी बिना दूध की गाय व बछड़ों को खुला छोड़ देते हैं। चाहे फिर वे बेशक उनके भाई बंधु किसानों की फसलों का ही क्यों न नुकसान करें। वे सिर्फ अपना फायदा सोचते हैं। यही कारण है कि दिनों-दिन गौवंश की दुर्दशा बढ़ती जा रही है। जो धर्म के साथ-साथ देश की आर्थिक व्यवस्था के लिए भी चिंतनीय विषय है।

भारत भूमि में गाय की महिमा आदिकाल से ही रही है। हर हिन्दू के घर में सबसे पहली रोटी गाय की निकाली जाती थी । घर में बनने वाली पहली रोटी गायों को खिलाकर ही परिवार स्वयं कुछ खाता था। **कड़वा है, लेकिन सच है कि आज सड़कों पर आवारा घूमती व भूखी गाय कचरे से गंदगी व पॉलिथीन खाने को मजबूर हैं।** गौवंश की दुर्दशा लगातार बढ़ती जा रही है। सुख-समृद्धि की प्रतीक रही भारतीय गाय आज कूड़े के ढेर में कचरा और प्लास्टिक की थैलियां खाती दिखती हैं। **कैसी विडंबना है कि देवताओं को भी भोग और मोक्ष प्रदान करने की शक्ति रखने वाली गौमाता आज चारे के अभाव में कूड़े के ढेर में कचरा और प्लास्टिक की थैलियों से पेट भरने को मजबूर है।** हमारे देश में गाय को पूजा जाता है, लेकिन यह विडंबना ही है कि आज गाय की घोर उपेक्षा की जा रही है। शहरों में जगह-जगह लगे प्लास्टिक के ढेर पर मुंह मारती गायों के दृश्य आम हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में गायों की संख्या का घटना भी चिंताजनक विषय है। आज घरों में गाय की जगह कुत्ते के पालन पर जोर दिया जा रहा है।

एक युग था, जब लोग घर के द्वार पर लिखते थे- 'गाय स्वर्ग और मोक्ष की सीढ़ी है।'

फिर लिखा, 'अतिथि देवो भव'

फिर लिखा, 'शुभ लाभ'

फिर लिखा, 'स्वागतम'

और अब, 'कुत्तों से सावधान'

प्राचीनकाल से ही गाय भारतीय जीवन का एक अभिन्न अंग रही है, परंतु अफसोस आज हमारी मां को अनेक दुर्दशाओं का सामना करना पड़ रहा है। गाय हिन्दू धर्म में पवित्र और पूजनीय मानी गई है। ऐसे में यह सवाल विचारणीय हो जाता है कि आखिर वजह क्या है कि गाय आज सड़कों पर मल, गंदगी व प्लास्टिक खाने को मजबूर है।

आर्य समाज के संस्थापक, आधुनिक भारत के महान चिंतक, समाज-सुधारक स्वामी दयानंद सरस्वती **'गौ करुणानिधि'** में कहते हैं कि गाय मनुष्य के लिए अत्यंत मूल्यवान है और गाय का दूध पौष्टिक तथा घी और दही स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। गाय का दूध मां के दूध के गुण के समतुल्य होता है। गाय के दूध में संपूर्ण पौष्टिक तत्व पाए जाते हैं। 'गौ करुणानिधि' नामक पुस्तक में महर्षि दयानंद ने गाय के अनेक लाभों को दर्शाया। गाय जीवनोपयोगी, अतुलनीय तथा लाभकारी पशु है। हिन्दू धर्म और संस्कृति के अनुसार गाय के शरीर में 33 करोड़ देवता वास करते हैं एवं गौ-सेवा करने से एक साथ 33 करोड़ देवता प्रसन्न होते हैं। गाय के बिना हिन्दू संस्कृति और भारतीयता पूरी तरह अपूर्ण है। इसलिए गायों को पालने का संकल्प लेंवे ।

- मुकेश कुमावत बोराज, जयपुर
मो. 8385000205

दिल्ली का लोह स्तंभ

दिल्ली का लोह स्तंभ 7.21 मीटर लोहे से बनी संरचना है, जिसका निर्माण जंग प्रतिरोधी धातु से किया गया था। इसका निर्माण चंद्रगुप्त द्वितीय द्वारा करवाया गया था। यह दिल्ली के कुतुब मीनार परिसर में स्थित है।

माना जाता है कि इस स्तंभ का वजन छह टन से भी अधिक है। स्तंभ को जंग नही लगती है इस कारण से इसकी ओर वैज्ञानिकों का ध्यान आकर्षित हुआ है। बताया गया है कि लोहे पर क्रिस्टलीय आयरन (III) हाइड्रोजन फॉस्फेट हाइड्रेट की एक परत बनाई जाती है, जो इसे वातावरण के प्रभाव से बचाती है।

हालांकि, इस सिद्धांत को खारिज कर दिया गया है क्योंकि वैज्ञानिक निर्माण विधियों को समझते हैं और स्तंभ जंग खाता है, लेकिन बहुत धीमी गति से।

1969 में एरिख वॉन डेनिकेन ने कहा था कि स्तंभ पर जंग न लगना और इसके निर्माण की अज्ञात एवं अलौकिक प्रक्रिया के कारण है।

यह स्तंभ प्राचीन भारतीय लौहारों के अदभुत कौशल का एक प्रमाण है। यह स्तंभ हमें विस्मित करता है कि 2000 साल पहले भारतीयों का ज्ञान इतना उन्नत था जिस तक विश्व में आजतक कोई भी नही पहुंच सका है।

इसके निर्माण में इस्तेमाल की गई धातुकर्म के बारे में अधिक जानने के लिए शोध जारी है।

श्रीकृष्ण से मिली शिक्षा : एक अनमोल धरोहर

श्रीकृष्ण का जीवन और उनकी शिक्षाएं हमें जीवन जीने की अद्वितीय कला सिखाती हैं। उनके द्वारा दिए गए उपदेश न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वे हमारे जीवन में नैतिक और व्यावहारिक मूल्य भी जोड़ते हैं। श्रीकृष्ण से हमें जो प्रमुख शिक्षाएं मिलती हैं, वे हमारे जीवन को सही दिशा में ले जाने में सहायक हैं।

1. कर्म का महत्व : श्रीकृष्ण का सबसे प्रमुख उपदेश गीता में मिलता है, जिसमें उन्होंने अर्जुन को बताया, 'कर्म करो, फल की चिंता मत करो'। यह शिक्षा हमें सिखाती है कि हमें अपने कर्तव्यों का पालन बिना किसी अपेक्षा के करना चाहिए। हमारे हाथ में सिर्फ कर्म है, फल नहीं। यह सिद्धांत जीवन के हर क्षेत्र में लागू होता है, चाहे वह शिक्षा हो, व्यवसाय हो या व्यक्तिगत संबंध।

2. सच्चा प्रेम और भक्ति : श्रीकृष्ण का जीवन प्रेम और भक्ति का प्रतीक है। गोपियों के साथ उनकी लीलाएं और राधा के साथ उनका प्रेम इस बात का प्रतीक है कि सच्चा प्रेम नि:स्वार्थ और समर्पित होता है। उनके प्रेम ने यह सिखाया कि भक्ति और प्रेम में कोई स्वार्थ नहीं होना चाहिए। सच्चे प्रेम में समर्पण और विश्वास महत्वपूर्ण होते हैं।

3. धर्म और सत्य का पालन : महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण ने पांडवों का मार्गदर्शन किया और उन्हें धर्म और सत्य के पथ पर चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने दिखाया कि चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन क्यों न हों, हमें हमेशा धर्म और सत्य का पालन करना चाहिए। यह शिक्षा हमें जीवन में नैतिकता और आदर्शों के महत्व को समझने में मदद करती है।

4. धैर्य और साहस : श्रीकृष्ण का जीवन धैर्य और साहस का अद्वितीय उदाहरण है। उन्होंने हर परिस्थिति में धैर्य बनाए रखा और अपने कर्तव्यों का पालन किया। उनके जीवन से हमें यह सीख मिलती है कि कठिनाइयों का सामना धैर्य और साहस से करना चाहिए। चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी विपरीत क्यों न हों, हमें हार नहीं माननी चाहिए।

5. नेतृत्व और रणनीति : श्रीकृष्ण का नेतृत्व और उनकी रणनीति अद्वितीय थी। महाभारत के युद्ध में उन्होंने न केवल अर्जुन को नैतिक समर्थन दिया, बल्कि पांडवों की जीत के लिए महत्वपूर्ण रणनीतियाँ भी बनाईं। उनके जीवन से हमें यह सीख मिलती है कि एक सच्चे नेता को सही निर्णय लेने की क्षमता और नैतिकता का पालन करना चाहिए।

निष्कर्ष : श्रीकृष्ण का जीवन और उनकी शिक्षाएं हमें जीवन में कई महत्वपूर्ण मूल्य और नैतिकताएँ सिखाती हैं। उनके उपदेश हमें प्रेरित करते हैं कि हम अपने कर्तव्यों का पालन निष्काम भाव से करें, सच्चा प्रेम और भक्ति निभाएं, धर्म और सत्य के पथ पर चलें, धैर्य और साहस का परिचय दें, और एक सच्चे नेता की तरह जीवन का मार्गदर्शन करें।

इन शिक्षाओं को अपने जीवन में आत्मसात करके हम न केवल अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं, बल्कि समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। श्रीकृष्ण का जीवन हमें यह सिखाता है कि सच्चे अर्थों में जीवन जीना क्या होता है और कैसे हम अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं।

- सीमा कुमावत (मारवाल)

चाय के प्याले में तूफ़ान

गुस्ताख़ चाय तूने यह क्या कर दिया,
भरी दोपहरी में क्यों इतना तूफान मचा दिया,
कोई भूत प्रेत का कोई साया तो तुझमें नहीं आ गया,
जला गया मेरी प्रियतमा का नाजुक बदन,
क्यों दर्द इतना दे गया,
बड़े प्यार से तुझे हर रोज़ की तरह अपने लबों से लगाई थी,
तेरी खुशबू में इतनी मस्ती छायी थी,
आँखों की पलके ज़रा सी सुस्ताई थी,
जरा लबों से क्या किया तुझको दूर,
तू हो गयी कप से काफूर,
दिखा दी अपनी औक़ात तूने,
कलेजा को तो जलाती ही है,
आज जिस्म भी जला दिया तूने,
अच्छा सिला दिया उनकी चाहत का ओ बेवफ़ा तूने,
मैंने बेगम को आज फिर याद दिलाये इसके नुक़सान,

चाय लाती है अनिद्रा, कब्ज़, ऐसीडीटी,
सिरदर्द, उदासी, चिड़चिड़ापन, और थकान,
चाय का टेनिन पाचन तंत्र को करता है परेशान,
कैफीन बढ़ाता है चिन्ता और तनाव,
बहुत सारे इसके हैं इसके नुकसान,
तुम्हें खबर है चाय से इश्क किये,
मुझे पचास साल से अधिक गुजर गये,
चाय मोहब्बत नहीं है जो बेवफा हो जायेगी,
हो सकता है कुछ दिन तक इसकी तलब बैचेन कर जायेगी,
पर उस वक्त जहन में मेरी याद आयेगी,
जो नयापन और ताजगी लायेगी,
जान है तो है जहान,
तू भी इसका चस्का छोड़ दे मेरी जान,
इतना सा कहा मेरा मान।

- सुभाष मारोठिया

वृक्षों का महत्व

कहते हैं पृथ्वी पर जीवन अर्थात मनुष्य, जीव-जन्तु, पशु पक्षी इत्यादि के अस्तित्व के लिए पांच मूलभूत तत्वों का अस्तित्व अवश्यसम्भावी है या यूं कह लें कि हमारा शरीर पंच तत्वों से मिलकर बना है। ये पंच तत्व आकाश, वायु, अग्नि, जल व पृथ्वी है। इन पंच तत्वों में से किसी एक की भी अनुपस्थिति में जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इसी प्रकार इनके अतिरिक्त एक तत्व और है जिनके बिना सृष्टि की कल्पना नहीं की जा सकती है। पृथ्वी पर वृक्षों का होना बहुत ही आवश्यक है। क्योंकि हमें प्राण वायु वृक्षों से ही मिलती है। पेड़ पौधे जलवायु तथा तापमान को संतुलित बनाए रखने में अहम् भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार वृक्ष पर्यावरण का प्रमुख अंग हैं। वृक्ष सूर्य की ऊर्जा को स्वयं में अवशोषित कर लेते हैं अर्थात सूरज की किरणों को ली लेते हैं तभी तो धरती पर गर्मी या ऊर्जा का संतुलन बना रहता है। वृक्ष ना हो तो धरती पर इतनी गर्मी बढ़ जायेगी कि जीव मात्र के लिए उसे सहना असंभव हो जायेगा। वृक्ष ही बादलों को बुलाते हैं, वृक्षों की नमी से बादल नीचे उतरते हैं तथा वर्षा करते हैं। जहां वृक्ष नहीं होते हैं उन स्थानों पर वर्षा भी न्यूनतम ही होती है। अच्छी वर्षा के लिए अच्छी मात्रा में वृक्षों का होना बहुत आवश्यक है। वर्षा नहीं होगी तो पानी की कमी हो जाएगी, अकाल पड़ जाएगा, पीने के पानी की किल्लत होगी तथा किसानों को फसलों के लिए पर्याप्त पानी नहीं मिलने से अनाज व सब्जियों की पैदावार को नुकसान पहुंचेगा। अब हम अदांजा लगा सकते हैं कि वृक्ष हमारे लिए कितने महत्वपूर्ण हैं। इतना ही नहीं वृक्ष भूमि के कटाव को रोकने में भी सहायक होते हैं। आज पर्वतीय क्षेत्रों में भू-स्खलन व अन्य प्राकृतिक आपदाओं का प्रमुख कारण ही वृक्षों का कटाव है। वृक्षों की जड़े भूमि की ऊपरी सतह को अपनी जड़ों के द्वारा पकड़े रहती हैं। जब कभी जल का बहाव बहुत तेजी से बढ़ता है तो वृक्ष धरती को थामें रहते हैं मगर जहां वृक्ष नहीं होते वहां की धरती जल के प्रवाह को सहन नहीं कर पाती और पानी अपने साथ उपजाऊ भूमि, मिट्टी और पहाड़ों तक को बहा ले जाता है। इसके अतिरिक्त पेड़ों से हमें असंख्य खाद्य सामग्री यथा फल, सब्जियां, दवा-औषधियां, कपास, गोंद, खड़, मेवे, मसालें इत्यादि सम्पदा प्राप्त होती है जो कि हमारे लिए प्रकृति का अद्भुत उपयोगी अमूल्य उपहार है। पेड़ों से प्राप्त लकड़ी से फर्नीचर व मकान इत्यादि बनाए जाते हैं। **वृक्ष-धन अमूल्य है, हमें इनकी रक्षा करनी चाहिए।** वृक्षों की महत्ता हम सब जानते हैं तथा इन्हें काटने के क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं, यह भी सबको पता है फिर भी मनुष्य अंधाधुंध पेड़ काट रहा है। वृक्षारोपण की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। हममें से प्रत्येक व्यक्ति यदि अपने घर के बाहर एक छायादार वृक्ष लगाए तो राहगीरों को रास्ते में छाया ही छाया मिलेगी और तपती धूप में छाया का कितना महत्व है इससे हम भलीभांति परिचित हैं। शहरों में वृक्षों की संख्या ना के बराबर होने से दिन भर दिन गर्मी बढ़ती जा रही है। यदि तापमान इसी तेजी से बढ़ा तो आने वाले कुछ सालों में स्थिति विस्फोटक हो सकती है। वर्षा ऋतु में वृक्ष लगाना आसान होता है क्योंकि यही ऋतु वृक्षारोपण के लिए अनुकूल ऋतु होती है। सावन माह त्यौहारों का माह है तो क्योंकि न इस बार वृक्षारोपण को भी एक त्यौहार की तरह जोर-शोर से मनाया जाए। पहल कौन करेगा ये मत सोचिए क्योंकि पहल हमें ही करनी है और अपने घर से ही करनी है। इस समय **"एक पेड़ माँ के नाम"** अभियान के तहत नर्सरियों में छायादार वृक्षों के पौधे आसानी से उपलब्ध हैं। अपने नजदीक की किसी भी नर्सरी से लाकर एक वृक्ष अपने घर के आंगन में अवश्य लगाएं।

-उर्वशी बालोदिया

आध्यात्म

कृष्ण तत्व

एक कुशल मार्गदर्शक और नीति निपुण मित्र की जीवन में क्या भूमिका होती है, यह भगवान श्रीकृष्ण के जीवन में देखनी चाहिए।

अपने परम मित्र अर्जुन को उन कृष्ण ने कैसे संभाला और एक आदर्श क्षत्रिय के सोपान तक उन्हें ले गये। यही कारण था कि अर्जुन ने भी जब महाभारत का युद्ध अनिवार्य हो गया तो हजारों सैनिकों के बदले केवल उन एक श्रीकृष्ण का नेतृत्व माँगा था।

जब आपका मित्र किसी घोर विषाद व निराशा में घिरकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाए तो उस समय उस मित्र के प्रति हमारा क्या कर्तव्य होना चाहिए, जिससे वह अपने कर्तव्य पथ से विमुख होकर हँसी का पात्र न बने। यह श्रीकृष्ण के जीवन का एक अहम और श्रेष्ठ किरदार है।

अपने शरणागतों को विषाद से उबारकर प्रसाद तक पहुँचाना तो शरणागत वत्सल श्री कृष्ण से सीखे। कृष्ण केवल मित्रता करना ही नहीं जानते अपितु हर हाल में मित्रता निभाना भी जानते हैं, अब वो चाहे अर्जुन से हो, उद्धव से हो या विप्र सुदामा से ही क्यों न हो। पवित्र भावना में, पवित्र उद्देश्यों में बिना किसी सम्मान की अपेक्षा के सदैव प्रसन्नता पूर्वक कर्म करते रहना ही कृष्ण होना है।

धन की तुलना में सद्गुणों की पूँजी कहीं अधिक मूल्यवान है। कहते है "घमंडी के लिए कोई ईश्वर नहीं, इर्ष्यालु का कोई अपना नहीं और क्रोधी का कोई मित्र नहीं।" जीवन का श्रृंगार मूल्यवान हार नहीं, अपितु सुंदर व्यवहार है। यही कृष्ण तत्व है।

आग्नेय कोण में बेडरूम के दुष्प्रभाव

वास्तु के अनुसार बने हुए शयनकक्ष के माध्यम से घर के मुखिया के साथ ही घर के अन्य सदस्यों को भी अपने जीवन में सुख, शांति, समृद्धि और पद- प्रतिष्ठा भी देखने को मिलती है। गलत स्थान पर बना शयनकक्ष बच्चों की पढ़ाई एवं उन्नति में बाधक, उनके विवाह में परेशानी देने वाला और संतान उत्पत्ति में भी समस्याएं खड़ी कर सकता है। आग्नेय कोण दक्षिण और पूर्व दिशा के मध्य स्थान यानि कि साउथ ईस्ट कार्नर को आग्नेय कोण के नाम से जाना जाता है।

- वास्तु की बात करें तो आग्नेय कोण में रसोईघर बनाना, बिजली के उपकरण जैसे की मीटर, बिजली की वायरिंग, गीजर, बॉयलर, जनरेटर, कंप्यूटर आदि को लगाना सही माना जाता है।
- यदि आपने अग्नि कोण में कोई रूम बना लिया है तो आप उसे बेडरूम या फिर मास्टर बेडरूम के लिए उसका उपयोग नहीं करें उस कमरे का उपयोग आप गेस्ट रूम के रूप में कर सकते हैं।
- अग्नि कोड वाले कमरे में लगातार सोने से व्यक्ति को ब्लड प्रेशर, शुगर और ऑपरेशन के साथ ही छोटे-मोटे एक्सीडेंट भी अक्सर जीवन में देखने को मिल सकते हैं। कई बार देखने को मिलता है कि यहां सोने वाला व्यक्ति अपने जीवन में जोखिम वाले कार्य करने में ज्यादा इंटरेस्ट दिखाता है।
- इस कोण में पति-पत्नी के सोने पर उनमें भी अक्सर बिना बजह बाद-विवाद देखने को मिलता है और कई बार छोटे-छोटे मुद्दे एक दूसरे से अलग रहने या तलाक तक भी पहुंच जाते हैं।
- इस कोने में रहने वाले स्टूडेंट अथवा नवयुवक शुक्र ग्रह के प्रभाव में आ जाने से अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं। कई बार उनमें धूम्रपान और शराब की लत भी देखने को मिल सकती है। इस कोण का स्वामी ग्रह शुक्र होने से व्यक्ति भौतिकता की ओर खिंचने लगता है इसलिए यदि आपका बच्चा इस कोण में रहकर अपने लक्ष्य से भटक रहा है तो शीघ्र ही उसे आप ईशान कोण में शिफ्ट करें।
- अग्नि कोण में फैशन और मॉडलिंग के साथ ही फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े हुए लोगों के रहने पर उनको अपने करियर में सकारात्मक परिणाम देखने को मिलते हैं ।
- अग्नि कोण में बेडरूम होने से आर्थिक उन्नति में बाधा और धन हानि की भी संभावना बनती है इसके साथ ही आय में कमी और खर्चों में वृद्धि भी देखने को मिलती है। ऐसे में आपको वित्तीय तनाव महसूस हो सकता है।

अग्नि कोण के वास्तु दोष दूर करने के प्रभावशाली उपाय-

- अग्नि कोण के दोषों की शांति के लिए आपको अग्नि कोण वाले शयन कक्ष की पूर्वी दीवाल पर या अपने पूजा घर में अभिमंत्रित एवं हस्त निर्मित अग्नि कोण के स्वामी शुक्र ग्रह का वैदिक यंत्र या फिर आग्नेय दोष निवारक यंत्र की स्थापना करनी चाहिए। इन यंत्रों से अग्नि कोण के बेडरूम में स्थित वास्तु दोषों में आपको काफी कमी देखने को मिलेगी।
- यदि परिस्थिति वश अग्नि कोण के बेडरूम में ही सोना पड़े तो आपको अपने बिस्तर को अग्नि कोण से हटाकर पश्चिम या दक्षिण- पश्चिम की ओर लगा लेना चाहिए।
- अग्नि कोण वाले बेडरूम में ऑफ व्हाइट कलर करने से आपके मन को काफी शांति मिलेगी।
- यहां आप भगवान गणेश की छोटी फोटो या मूर्ति भी रख सकते हैं।
- अग्नि कोण में कोई टॉयलेट या बाथरूम भी आपको कभी भी नहीं बनवाना चाहिए ।

Note- किसी भी निष्कर्ष पर पहुचने से पहले किसी योग्य ज्योतिर्विद से परामर्श करने के बाद ही किसी सार्थक निर्णय पर पहुंचना उचित माना जाता है।

-डॉ योगेश, ज्योतिषाचार्य, मानसरोवर, जयपुर।
M.:8058169959

मद्रास उच्च न्यायालय का निर्णय

गैर-हिन्दुओं को ध्वज स्तम्भ क्षेत्र से आगे जाने की इजाजत नहीं

तमिलनाडू की मदुरै पीठ में न्यायामूर्ति एस. श्रीमती ने डी. सेथिंल की याचिका पर निर्णय देते हुए निर्देश दिए कि मंदिर में मौजूद बोर्ड पर लिखा हो कि गैर हिन्दुओं को मंदिर में कोडिमारम (ध्वज स्तम्भ) क्षेत्र से आगे जाने की इजाजत नहीं है। हिन्दुओं को अपने धर्म को मानने व पालन करने का अधिकार है उनके धर्म के रीति-रिवाजों और प्रथाओं में हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता। मंदिरों को पिकनिक स्पॉट न समझें, मंदिर में सिर्फ पूजा-अर्चना हो। अगर कोई गैर-हिन्दु मंदिर में विशेष भगवान के दर्शन का दावा करता है तो उससे वचन लेना होगा कि उसका दर्शन करने वाले भगवान में विश्वास है और हिन्दु धर्म के रीति-रिवाजों और प्रथाओं का पालन करेगा, उसके बाद ही उसे मंदिर में प्रवेश की इजाजत दी जाए। इसकी डिटेल एक रजिस्टर में दर्ज की जाये।

पारिवारिक जीवन में हम समन्वयवादी बनें

संयुक्त परिवार प्रणाली न केवल प्राचीनकाल में पुराने समय में उपयोगी थी, वरन आज भी उतनी ही उपयोगी है। जिन परिवारों के वयस्क सदस्य नौकरी-पेशा होने के कारण अलग स्थानों पर चले जाते हैं, उनकी बात और है। पर ऐसे परिवारों की संख्या नगण्य-सी है। थोड़े-बहुत लोग ही नौकरियों में लगे हुए हैं, जिनका प्रतिशत 3-4 से अधिक न होगा। संयुक्त परिवारों के टूटने का एक कारण यह माना जाये तो उचित न होगा। संयुक्त परिवारों के टूटने के कारण और भी हैं। एक ही गाँव में पुत्र अपने पत्नी-बच्चों के साथ माता-पिता के संग एक घर में नहीं रहना चाहता। शादी होते ही माँ-बाप अपने बेटों को अलग करने की सोचते हैं या बेटे-बहू स्वयं इसकी भूमिका बनाते हैं।

विवाहित पुत्र माता-पिता से अलग जाकर रहने लगें, यह उस समय तो लाभप्रद दिखता है। पुत्र और बहू सोचते हैं कि अपनी कमाई में खुद ही ऐशोआराम से रहा जाए, माँ-बाप को उसका हिस्सा क्यों दिया जाए? माँ-बाप को अपने पुत्र के अलग हो जाने का क्षोभ तो होता है, पर वे आजकल के जमाने का चलन मानकर संतोष कर लेते हैं। आमदनी और उसके एकाकी उपयोग का पक्ष दीखता तो बड़ा सुहाना है, पर अलग घर बसाने में जितनी परेशानियों का सामना करना पड़ता है, उनकी कोई गिनती नहीं। पहले तो इसका ध्यान ही नहीं रहता, पर जब परेशानियाँ सामने आकर खड़ी हो जाती हैं, तब याद आता है कि इस समय घर का कोई व्यक्ति हमारे साथ रहा होता तो कितना अच्छा था? बाहर जाने पर बच्चों की देख-रेख से लेकर रोग बीमारी तक में इस प्रकार की गुत्थियाँ सामने आ खड़ी होती हैं।

जो लोग संयुक्त परिवार में रहते हैं, वे भाग्यशाली हैं। पर समस्याएँ वहाँ भी उत्पन्न होती हैं। संयुक्त परिवारों के टूटने का कारण जहाँ अधिकतम सुख-सुविधाएँ उठाने का आकर्षण है, वहीं परिवारों में होने वाले, क्लेश-कलह भी हैं, बल्कि मुख्य कारण तो यही नजर आता है कि पुरानी पीढ़ी यानी कि माता-पिता और नई पीढ़ी पुत्र तथा बहू आपस में सामंजस्य नहीं बैठा पाते।

पुरानी और नई पीढ़ी के द्वंद्व ने बढ़ते-बढ़ते सामाजिक रूप धारण कर लिया है। इसकी शुरुआत परिवार से हुई है। जिस दिन लड़के की शादी होकर बहू घर आती है, उस दिन से माँ-बाप अपने बेटे को परिपक्व दृष्टि से देखने लगते हैं। तब तक उनकी दृष्टि में लड़का, बच्चा-सा था पर अब बहू ले आया है तो वह संसारी व्यक्ति हो चुका है और उसे संसारी व्यक्ति की तरह रहना चाहिए। माता-पिता के निर्देश भी उसे इसी रूप में मिलने लगते हैं।

पत्नी की तरफ अधिक आकर्षित होते देखकर माँ यह समझती है कि उसका बेटा हाथ से निकला जा रहा है। कल तक जो बेटा माँ की गोद में 'माँ-माँ' कहता हुआ आकर सिर रखकर लेट जाता था, वह दूसरे घर से आई लड़की के मोहपाश में आबद्ध होकर माँ की ओर ध्यान देना भी नहीं चाहता। माँ का रवैया इसी महत्त्वपूर्ण बिंदु पर चिंता करते-करते बहकने लगता है और यह दूसरे घर से आई लड़की की मान्यता इतने प्रबल रूप में अपनी जड़ें जमा लेती है कि वह 'बहू' को कभी भी अपनी बेटी की तरह नहीं मान सकती।

सास-बहू के पारिवारिक झगड़ों का अधिकांश कारण यह असंतुलित दृष्टि ही है। कदाचित् माता बहू को अपनी बेटी की तरह समझकर उससे आत्मी व्यवहार करने लगें। दोष अकेली माँ के मत्थे भी नहीं मढ़ा जाना चाहिए। कोई युवती जब अपने परिवार को, भाई-बहनों को, सगे माता-पिता को छोड़कर अपनी ससुराल आती है तो यह आशा की जानी चाहिए कि बह अपने पति के परिवारवालों को भी अपने घर के लोगों की तरह ही माने, पर होता यह है कि एक तो बदला हुआ वातावरण, दूसरे मायके में दी गई शिक्षाएँ और अपनी सहेलियों से मिले निर्देश तथा अनुभव उसे अजनबी परिवार के प्रति रूखा बना देते हैं। साथ रहते-रहते समझदार सास-बहू अपने संबंध अच्छे बना लें यह बात और है; अन्यथा जिन घरों में सास-बहू के बीच हमेशा द्वंद्व चला करता है, वहां डोरी शुरू से खिंचने लगती है।

बहू उस समय अपने पति पर अपना अधिकार करने के लिए प्रयत्नशील रहती है तो माँ अपने बेटे को हाथ से निकलने देने के लिए सजग, और पति तथा पुत्र को लेकर, अन्य कारणों की आड़ में संघर्ष शुरू होता है। जिन घरों में ऐसा नहीं होता, वहाँ भी दूसरी तरह से द्वंद्व चलने लगता है। यदि सास बहू को अपनी बेटी मान भी ले तो वह अपेक्षा करती है कि बहू, बेटी की तरह ही उसकी आज्ञाकारिणी हो। इस तरह की आज्ञाएँ बहुत कुछ यह समझकर दी जाती हैं: जैसे बहू एकदम नासमझ या बच्ची हो। यह ठीक है कि बहू की अपेक्षा सास अधिक अनुभवी और दूरदृष्टि संपन्न होती है, पर इसका अर्थ यह तो होता नहीं कि बहू का मस्तिष्क एकदम कोरा कागज ही है, जिस पर समझ या सूझ-बूझ का एक भी अक्षर नहीं लिखा हुआ है।

सास की आज्ञाओं और निर्देशों में बहू अपनी उपेक्षा या अवमूल्यन समझने लगती है; क्योंकि सास के सामने उसकी योग्यता और क्षमता नगण्य हो जाती है। वह न अपने मन का कोई काम कर सकती है और न उसे इसकी छूट ही अनुभव होती है तो वह यह मानने लगती है कि सास उसे अपने हाथ का यंत्र भर बनाकर रखना चाहती है। मनमुटाव की ग्रंथियाँ यहीं से बनना शुरू होती हैं।

किन्हीं-किन्ही घरों में सास-बहू का संघर्ष आमने-सामने होने लगता है। ऐसा उन घरों में होता है, जहाँ सास और बहू वैचारिक तथा मानसिक दृष्टि से एक ही धरातल पर रह रही हों; अन्यथा यह संघर्ष शीतयुद्ध के रूप में भी चलता है। माँ अपने

बेटे को अपनी ओर खींचती है तथा बहू अपने पति के कान अलग भरती है। कुल मिलाकर ऐसी दशा में पुरुष की स्थिति बडी विचित्र हो जाती है। पति तटस्थ रहता है तो भी उस पर दोनों ओर से प्रहार होता है तथा किसी का पक्ष भी लेता है तो दूसरा पक्ष उसको अपने हाथ से बाहर निकल गया समझता है। माँ का पक्ष लेने वालों की संख्या कम है, अधिकांश पति अपनी पत्नी की ओर ही झुकते हैं।

पत्नी की ओर झुकने का कारण है। एक तो पति, पत्नी से अधिक प्रभावित रहता है क्योंकि विवाह के बाद उसी का संपर्क सान्निध्य बड़ा रसमय लगता है और दूसरे विवाह के बाद माता-पिता द्वारा अपनाए गए रवैयों के कारण उनमें ही अधिक दोष देखने लगता है।

जो भी हो-पारिवारिक क्लेश के कारण परिवार टूटे या बना रहे, दोनों ही परिणाम अच्छे नहीं कहे जा सकते। विवेकशीलता और पारिवारिक सद्भाव बनाए रखने के लिए उन गुत्थियों को समझ-बूझ के साथ सुलझाया जाना चाहिए, जो उसे तोड़ देती हैं या चटखा देती हैं। इन समस्याओं का समाधान किए बिना एक परिवार में सुख-शांति का वातावरण बनाए रखना असंभव है।

साभार : युग निर्माण योजना

बाड़ करेला (ककोड़े यानी मीठा करेला)

आजकल के दौर में जंक फूड का इतना क्रेज बढ़ चुका है कि लोग अपने शरीर को जरूरी ताकत देनी वाली सब्जी, दाल का सेवन कम ही करते हैं। लेकिन, बहुत कम लोग जानते हैं कि कुछ सब्जियां ऐसी होती हैं, जिन्हें कुछ दिन खाने पर ही इसका फायदा मिल जाता है। ऐसी ही एक सब्जी है **कंटोला**। यह दुनिया की सबसे ताकतवर सब्जी है, इसे औषधि के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है। इस सब्जी में इतनी ताकत होती है कि महज कुछ दिन के सेवन से ही आपका शरीर तंदुरुस्त बन जाता है या यूं कहें कि फौलादी बन जाता है। कंटोला को ककोड़े और मीठा करेला नाम से भी जाना जाता है।

अगर आप भी अपनी रोजाना डाइट में इसे शामिल करते हैं तो दूसरे तत्वों और फाइबर की कमी को भी यह पूरी करती है। ककोड़े यानी मीठा करेला को सेहतमंद माना जाता है। आयुर्वेद में भी इसे सबसे ताकतवर सब्जी के रूप में माना गया है।

यह सब्जी स्वादिष्ट होने के साथ-साथ प्रोटीन से भरपूर होती है। इसे रोज खाने से आपका शरीर ताकतवर बनता है। इसके लिए कहा जाता है कि इसमें मीट से 50 गुना ज्यादा ताकत और प्रोटीन होता है। कंटोल में मौजूद फाइटोकेमिकल्स स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में काफी मदद करता है। यह एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर सब्जी है। यह शरीर को साफ रखने में भी काफी सहायक है।

कंटोला आमतौर पर मॉनसून के मौसम में भारतीय बाजारों में देखा जाता है। इसमें कई स्वास्थ्य लाभ है जिसकी वजह से इसकी खेती दुनियाभर में शुरू हो गई है। इसकी मुख्य रूप से भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में खेती की जाती है।

वजन घटाने में सक्षम: कंटोला में प्रोटीन और आयरन भरपूर होता है जबकि कैलोरी कम मात्रा में होती है। यदि 100 ग्राम कंटोला की सब्जी का सेवन करते हैं तो 17 कैलोरी प्राप्त होती है। जिससे वजन घटाने वाले लोगों के लिए यह बेहतर विकल्प है।

कैंसर से बचाए : कंटोला में में मौजूद ल्युटेन जैसे केरोटोनोइडस विभिन्न नेत्र रोग, हृदय रोग और यहां तक कि कैंसर की रोकथाम में सहायक है।

पाचन क्रिया होगी दुरुस्त : अगर आप इसकी सब्जी नहीं खाना चाहते तो अचार बनाकर भी सेवन कर सकते हैं। आयुर्वेद में कई रोगों के इलाज के लिए इसे औषधि के रूप में प्रयोग करते हैं। यह पाचन क्रिया को दुरुस्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

हाई ब्लड प्रेशर होगा दूर : कंटोला में मौजूद मोमोरडीसिन तत्व और फाइबर की अधिक मात्रा शरीर के लिए रामबाण हैं। मोमोरेडीसिन तत्व एंटीऑक्सीडेंट, एंटीडायबिटीज और एंटीस्ट्रेस की तरह काम करता है और वजन और हाई ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखता है।

एंटी एलर्जिक : कंटोल में एंटी-एलर्जन और एनाल्जेसिक सर्दी खांसी से राहत प्रदान करने और इस रोकन में काफी सहायक है।

संकलन : पत्रिका टीम

वर्ल्ड स्ट्रेंथ चैंपियनशिप में नन्दकिशोर कुमावत ने जीता सिल्वर पदक

कजाकिस्तान में आयोजित 11वीं वर्ल्ड स्ट्रेंथ चैंपियनशिप में नन्दकिशोर कुमावत ने सिल्वर पदक जीता है। नन्दकिशोर ने इंकालाई बेंच प्रेस के 60 किलो भार वर्ग में 122.5 किलो वजन उठाकर यह पदक जीता है। कुमावत ने सिल्वर पदक जीतकर देश व समाज का नाम रोशन किया है। नन्दकिशोर कुमावत ने अपनी सफलता का श्रेय अपने कोच पवन कुमावत व माता को दिया है। नन्दकिशोर की सफलता पर 'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार ने बधाई दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

वि/1 श्री महेश चन्द जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/2 श्री नीरज धुन्धारिया, आनन्दपुरी, जयपुर
वि/3 श्री मनीष खोवाल कुमावत एडवोकेट, जयपुर
वि/4 श्री मनोज कुमार सिरसवा, जयपुर
वि/5 श्री शंकर लाल जायलवाल, टोंक रोड, जयपुर
वि/6 श्री यतेन्द्र अजमेरा, त्रिमूर्ती सर्किल, जयपुर
वि/7 श्री राकेश चन्द सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/8 श्री संदीप नागा, बापू नगर, जयपुर
वि/9 श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, भौरोदिया जयपुर
वि/10 श्री मोहन कुमार घोड़ीवाल, जयपुर
वि/11 श्री नवल सरथल्या, महावीर नगर, जयपुर
वि/12 श्री पंकज कुमावत, वैरा झोटवाड़ा, जयपुर
वि/13 श्री चेतन कुमावत, डीसीएम, जयपुर
वि/14 श्री मनोज माचीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/15 श्री दीपक सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/16 श्री लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल, जयपुर
वि/17 श्री योगेश वर्मा, खड़गटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/18 श्री शैलेन्द्र खटगटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/19 श्री विनोद बालोदिया, दुर्गापुरा जयपुर (स्व.)
वि/20 श्री ओमकार मल घोड़ेला, रींगस रोड, जयपुर
वि/21 श्री रामपाल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/22 श्री रामप्रकाश बेरा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/23 श्री मोहनलाल घोड़ेला, नींदड़, जयपुर
वि/24 श्री कालूराम होदकास्या, नींदड़, जयपुर
वि/25 श्री जयनारायण मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/26 श्री महेंद्र खरोलिया, चांदपोल बाजार, जयपुर
वि/27 डॉ. सीताराम नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/28 श्री शंकरलाल मामोड़िया, 22 गोदाम, जयपुर
वि/29 श्री रामस्वरूप खोराणिया, जयपुर
वि/30 श्री नरेंद्र कुमार आर्य, ब्यावर, अजमेर
वि/31 श्री चेनसुख बड़ीवाल, बगरू, जयपुर
वि/32 श्री चांदमल कुमावत (घोड़ेला), मुंबई
वि/33 श्री राजसिंह गैदर, पांचावाला, जयपुर
वि/34 श्री मनोज ब्याडवाल, श्रीराम नगर, झोटवाड़ा
वि/35 श्री गोपाल मारवाल, श्रीमाधोपुर, सीकर
वि/36 श्री मनीष मारवाल, निवारू रोड, जयपुर
वि/37 श्रीरूप सिंह कारगवाल, जयपुर
वि/38 श्री दया प्रकाश जलांधरा, इंदौर
वि/39 श्री नवीन कुमार वर्मा भौंरोदिया, इंदौर
वि/40 श्री राजेंद्र प्रसाद, तमिलनाडु
वि/41 श्री शिव भगवान चेजारा, सिरस्वा, सीकर
वि/42 श्री तेज प्रकाश नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/43 श्री पृथ्वीराज जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/44 श्री मोहन कुमार बालोदिया, जयपुर
वि/45 श्री पुरुषोत्तम लाल घोड़ेला, जयपुर
वि/46 श्री ललित स्वरूप पोडेला, जयपुर
वि/47 श्री विजय कुमावत (भौरोंदिया), जयपुर
वि/48 श्री अरविंद सिरस्वा, पचार, सीकर
वि/49 श्री मूलचंद खोवाल, जयपुर
वि/50 श्रीमती शशि वर्मा, धुमुनिया, दुर्गापुरा, जयपुर
वि/51 श्री राजेंद्र जूनवाल, टोंक फाटक, जयपुर

विशिष्ठ संरक्षक

वि/52 श्री सतीश चंद खादूवाल, जयपुर
वि/53 श्री नन्द किशोर सिरस्वा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/54 श्री संतोष खरनारिया कुमावत, अजमेर
वि/55 श्री प्रमोद कुडावलिया, छत्तीसगढ़,
वि/56 श्री मनोज बड़ीवाल, रायपुर, छत्तीसगढ़
वि/57 श्री श्रीराम नीमिवाल, जयपुर
वि/58 श्री भीवाराम दम्बीवाल, निर्माण नगर, जयपुर
वि/59 श्री पन्नालाल सिरस्वा, निर्माण नगर, जयपुर
वि/60 श्री रामस्वरूप कुमावत, बड़ीवाल, मुम्बई
वि/61 श्री हेमेंद्र सिंह गैंदर, टोंक रोड, जयपुर
वि/62 श्री साधुलाल चेजारा (सिरस्वा), जयपुर
वि/63 श्री गोपाललाल बासनीवाल, जयपुर
वि/64 श्री मोहनलाल मामोड़िया, जयपुर
वि/65 श्री रामकुमार बिरथलिया, जयपुर
वि/66 श्री जगदीश कुमावत
वि/67 श्री मुकेश कु. कुदीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/68 श्री रोहिताश मोरवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/69 श्री शुभकरण किरोड़ीवाल, सूरत
वि/70 श्री नान्छीलाल कुद्दीवाल, जयपुर
वि/71 श्री रमेश चंद माचीवाल, त्रिनगर, दिल्ली
वि/72 श्री राधेश्याम घासोलिया, दिल्ली
वि/73 श्री हंसराज मारवाल, ब्यावर
वि/74 श्री मेघराज सिरस्वा, छत्तीसगढ़
वि/75 श्री सूरजमल अनावड़िया, लाल कोठी, जयपुर
वि/76 श्री छीतरमल धुंधारिया, निवारू रोड, जयपुर
वि/77 श्री रामगोपाल खोराणिया, सोडाला, जयपुर
वि/78 श्री हरिशंकर राजौरा, जयपुर
वि/80 डॉ. प्रवीण कुमार मारवाल, झुंझुनूं
वि/81 श्री अर्जुन लाल धुन्धारिया, जयपुर
वि/82 श्री ओम प्रकाश धुन्धारिया, जयपुर
वि/83 श्री गोविंद नारायण तांगड़ा, जयपुर
वि/84 श्री सुरेंद्र सिंह तारकसी, बापू नगर, जयपुर
वि/85 श्री माधव दास बालोदिया, जयपुर
वि/86 श्री मोहित धुन्धारिया, जयपुर
वि/87 श्री बाबूलाल मंडावरा, जयपुर
वि/88 श्री मनीष वर्मा (सिरस्वा), दुर्गापुरा, जयपुर
वि/89 श्री हेमांक खड़गटा, मोती डूंगरी, जयपुर
वि/90 श्री कैलाश जलान्धरा, माल की ढाणी, दूदू
वि/91 श्री लोकेश जंहाजपुरिया, नंदपुरी, जयपुर
वि/92 श्री नन्दकिशोर आसीवाल, रिंगस, सीकर
वि/93 श्री बाबूलाल धुन्धारिया, वीकेआई, जयपुर
वि/94 श्री रामसिंह बैथाड़िया, तुलसी सेन्ट्रल मैन बाजार, सांगानेर
वि/95 श्री मदन लाल कुमावत, निर्माण नगर, जयपुर
वि/96 श्री नरेंद्र मामोडिया, अशोक नगर, उदयपुर
वि/97 श्री बाबूलाल कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/98 श्री रमेश मारवाल, खातीपुरा, जयपुर
वि/99 श्री प्रहलाद नारायण कुमावत, जयपुर
वि/100 श्री सत्यनारायण कुमावत, जयपुर
वि/101 श्री दीपेश टी. मॅडावरा, जयपुर
वि/102 श्री राकेश कुमावत (एडवोकेट), बरकत नगर, जयपुर
वि/103 श्री ओमप्रकाश कुमावत, जयपुर
वि/104 श्री रमेश चन्द ब्याड़वाल, नई दिल्ली
वि/105 डॉ. एन.के. कुमावत, लालकोठी, जयपुर
वि/106 श्री राम प्रसाद छापोला, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/107 श्री गिरधारी लाल सिंघनवाल, उदयपुर
वि/108 श्री राकेश कुमावत (धनारिया), उदयपुर
वि/109 श्री बाबूलाल वर्मा (ब्याड़वाल), नई दिल्ली
वि/110 श्री कन्हैयालाल खण्डारिया, जयपुर
वि/111 डॉ. महेश कुमार जालवाल, जयपुर
वि/112 डॉ. श्रीमती श्यामा कुमावत, उदयपुर
वि/113 श्री महेश कुमार कुमावत, किशनगढ़
वि/114 श्री मुकेश वर्मा (मरोड़िया), जयपुर
वि/115 श्री जयकिशन कुमावत (सोकिल), चौमूं
वि/116 श्री गजेंद्र मारवाल, सांगानेर, जयपुर
वि/117 श्री सुनील तोंदवाल, वीकेआई, जयपुर
वि/118 श्री मदनलाल जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/119 श्री सुमित कुमार घोड़ेला, मुंबई
वि/120 श्री ओम प्रकाश का कारगवाल, ब्यावर
वि/121 श्री प्रेमचन्द कुमावत (बैरा), झोटवाड़ा, जयपुर
वि/122 श्री योगेश वर्मा, मुम्बई
वि/123 श्री राजेश धूंधारिया, डूंडलोद कॉलोनी, जयपुर
वि/124 श्री सुनील प्रकाश वर्मा, मुम्बई
वि/125 श्री उम्मेद सिंह नन्दीवाल पुत्र श्री जी.एस. नन्दीवाल, जयपुर
वि/126 श्री रामलाल बैथाड़िया
वि/127 श्री लोकेन्द्र बालोदिया, जयपुर
वि/128 श्री कुमार गौरव कुमावत, कोटा
वि/129 श्रीमती मेघना कुमावत, जयपुर
वि/130 श्री गोपाल लाल कुण्डलवाल, जयपुर
वि/131 श्री दामोदर लाल जलान्दरा, जयपुर
वि/132 डॉ. पी.एम. कुमावत, उज्जैन
वि/133 श्री विमल कुमावत, जयपुर
वि/134 श्री महेन्द्र सिंह, बापूनगर, जयपुर
वि/135 श्री गोपाल लाल-सीताराम, जयपुर
वि/136 श्री रुपेश मारोठिया, बरकतनगर, जयपुर
वि/137 श्री घनश्याम देवतवाल, पटेल कॉलोनी, जयपुर
वि/138 श्री लक्ष्मीनारायण सिरस्वा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/139 श्री प्रहलादराय नोखवाल, भदाल, गोविन्दगढ़
वि/140 श्री घनश्याम खादूवाल, ढोडसर
वि/141 श्री मुकेश कारगवाल, बरकत नगर, जयपुर
वि/142 श्री कैलाश खटोड़, गजसिंहपुरा, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर
वि/143 श्री संजीव कुमार वर्मा, मानसरोवर एक्स., जयपुर
वि/144 श्री रामेश्वर बम्बोरिया, पवन टॉवर, सोडाला, जयपुर
वि/145 श्री राकेश कुमावत,(आसीवाल), बनीपार्क, जयपुर
वि/146 श्री यतेन्द्र सिंह, खिरणी फाटक, जयपुर
वि/147 श्री प्रारूप कुमावत, रांकड़ी, जयपुर
वि/148 श्री शिवदयाल धुंधारिया, सीकर रोड, जयपुर
वि/149 श्री छीतरमल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/150 श्री कैलाश घोड़ावड़, सूरत
वि/151 श्री गणेश लाल कुमावत, देवी नगर, जयपुर
वि/152 श्री ओम प्रकाश वर्मा, अलथान रोड, सूरत

''कुमावत इंडिया'' पत्रिका परिवार की ओर से सभी दिवंगत आत्माओं को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

18 जून श्री मनीष उर्फ शंकर कुमावत, टॉटियावास, जयपुर
18 जून श्रीमती पूर्णिमा देवी धर्मपत्नी स्व. श्री रामनारायण राहोरिया, हटवाड़ा रोड, जयपुर
18 जून श्री मोहन लाल अजमेरा, बरकत नगर, जयपुर
21 जून श्री जगदीश दम्बीवाल, इन्दौर
21 जून श्री कैलाश धुवारिया, श्याम नगर, इन्दौर
21 जून श्रीमती विमला देवी धर्मपत्नी श्री सतीश रेणीवाल, प्रताप नगर, जयपुर
21 जून श्रीमती गायत्री देवी धर्मपत्नी श्री बनवारी लाल मारवाल, जयपुर
23 जून श्रीमती सोनी देवी धर्मपत्नी स्व. श्री नारायण लाल देवतवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
23 जून श्री मोहन लाल कुसुम्बीवाल, बोरखेड़ा, कोटा
24 जून श्री नारायण देवरिया।
26 जून श्रीमती रजनी प्रकाश नाईक, पुणे
27 जून श्रीमती दुर्गा देवी धर्मपत्नी स्व. श्री बोदूराम किरोड़ीवाल, इन्दौर
29 जून श्रीमती दुर्गादेवी किरोड़ीवाल, इंदौर
29 जून श्री किशन लाल कुमावत (भरोदिया), इन्दौर
30 जून श्री सुमेरचन्द मंडावरा फतेहपुर रोड, सीकर
30 जून कुमारी जागृति पोत्री श्री मोतीलाल मालिया, पुत्री श्री सुनील मालिया, किशनगढ़
30 जून श्री आशीष (दीपू) खोराणिया, 22 गोदाम, जयपुर
5 जुलाई श्री दिनेश कुमार पुत्र स्व. रामदयाल गैंदर, टोंक फाटक, जयपुर
6 जुलाई श्री बनवारी लाल सोखल, दादी का फाटक, जयपुर
13 जुलाई श्री रामनारायण मारवाल, बापू नगर, जयपुर
13 जुलाई श्री सीताराम खूंखबाल पुत्र स्व. श्री मोहरी लाल जी, झोटवाड़ा, जयपुर
13 जुलाई श्री भगवान सहाय पुत्र स्व. श्री सत्यनारायण जी भौरोदिया, टोंक फाटक, जयपुर
14 जुलाई श्री कैलाश कारगवाल, अम्बेडकर कॉलोनी, जयपुर
16 जुलाई श्रीमती गीता देवी पत्नी सीताराम जी, पांच्यावाला, जयपुर

विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची

युवक

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी	मो. नंबर	
प्रमोद	M.Com.	Salaried	21.11.92	5'6''	खोवाल	बबेरीवाल	कारगवाल	बालोदिया	7790827021	जयपुर
दिनेश	B.Tech. (MNIT)	Process Engi. (IPCL)	26.9.96	5'10''	बरड़वाल	खोवाल	खनोरिया	दम्बीवाल	9413285291	जयपुर
रचित	B.Tech. (EC)	Pvt. Ltd.	16.7.94	5'8''	टॉक	खोरानिया	बबेरीवाल	मंडावरा	9351767706	उदयपुर
लखन	Engi. (Diploma)	3D Cisualizer	13.7.94	5'6''	सिरस्वा	मारोठिया	जलान्दरा	मारवाल	9602231197	जयपुर
सिद्धान्त	B.Com.	Pvt. Job	27.6.96	5'9''	बरमुण्डा	तूनवाल	मारोठिया	सिघवाल	8209963198	जयपुर
दीपक(तलाकशुदा)	B.A. Comp. diploma	Govt. Service	11.4.84	-	कारगवाल	जलान्दरा	बालोदिया	बबेरीवाल	7742989827	जयपुर
ईश्वर	M.A., B.Ed.	Pvt.	2.9.99	5'6''	बड़ीवाल	देदीवाल	देवतवाल	घटेलवाल	7737882509	रामगढ़
अमित	B.Com.,	Pvt.	23.12.94	-	होदकास्या	मामोड़िया	नीमीवाल	जालवाल	8946809997	जयपुर
राजकुमार	M.Com., MPA	ecommerce	31.1.97	5'11''	तूंदवाल	अनावड़िया	घोड़ेला	नागोरा	9414303920	जयपुर
हेमराज	M.A. ITI (Elec.)	Pvt. Job	15.7.98	5'7''	बासनीवाल	राजोयिा	सोकिल	कारगवाल	8504881765	जयपुर
अमित	B.Tech. (Civil)GEC	Designer	30.12.95	5'8''	तूनवाल	कारगवाल	तेरपुरिया	मारोठिया	7734072450	सीकर
रोहित	M.Com.	Steno Teacher	25.11.93	5'10''	सिरस्वा	मारोठिया	मोरवाल	बालोठिया	9351870560	जयपुर
-	B. TFch.(CS)IIT	Sr. Software engi. P.Ltd.	22.8.94	5'10''	तूनवाल	नागा	घोड़ेला	पारमवाल	9024284949	सीकर
शुभम	B.A., ITI	SBI Bank	25.8.95	5'8''	किरोड़ीवाल	दम्बीवाल	कारगवाल	धुंधारिया	8852813051	फुलेरा
निहाल	M.Com. (EAFM)	Genpact	1.3.97	5'4''	खेरिया	कारगवाल	खोरानिया	देवतवाल	8107337299	जयपुर
लोकेश	BEMS, OT Tecnica	Private Clinic	30.9.96	5'5''	उद्दीवाल	भनज	बधा	-	9111894089	इन्दौर
कपिल	B.B.A.	Business	12.11.95	5'6''	नराणिया	घोड़ेला	किरोड़ीवाल	सिरस्वा	9829155095	ब्यावर
अक्षत	B.Tech.	Business	20.5.2001	5'9''	सारड़ीवाल	कारगवाल	राहोरिया	मारवाल	9460316957	ब्यावर

युवतियाँ

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी	मो. नंबर	
किरन	M.Tech. BITS	Pvt. Ltd.	16.3.94	5'5''	सेगार	-	-	-	9313723675	जोधपुर
सोनिया(तलाकशुदा)	B.Com.	-	3.3.82	-	मारवाल	घोड़ेला	घासोलिया	कुदाल	9561308112	जयपुर
तन्नू	B.A. (Fason Dign)	-	12.12.2001	5'6''	होदकास्या	दम्बीवाल	मारवाल	जलान्दरा	9828632505	किशनगढ़
शैफाली	M.A.	Private	13.12.96	5'1''	उजीवाल	दम्बीवाल	मामोडिया	जलान्दरा	9784218917	जयपुर
मीनल	B.Com., MBA	Manager Kotak Bank	23.11.97	5'3''	माचीवाल	जलान्दरा	घोड़ेला	मारोठिया	9322197377	कुचामन
महिमा	B. Pharma (3rd yr.)	Student	13.6.2002	9'2''	सालेचा	गंगावन	दतंलेचा	गोयल	9826214934	धार(म.प्र.)
तीतीक्षा(मांगलिक)	M.Com.	Hair Artist	2.9.2000	5'4''	किरोड़ीवाल	घासोलिया	जलान्दरा	बारवाल	7690805508	उदयपुर
मोनाली	12th	-	23.4.2002	4'9''	उजीवाल	नागा	होदकास्या	मारोठिया	8200878428	सूरत,सीकर
शारदा	M.A.	Govt, Hospital	1992	-	कुण्डलवाल	दम्बीवाल	होदकास्या	बरबुंडा	9001956606	जयपुर
रश्मि(तलाकशुदा)	B.A.	-	25.4.96	5'7''	तुनगरिया	राहोरिया	छापोला	जलान्दरा	9680931428	किशनगढ़
शिखा	MBA (HR)	HR Manager, Jaipur	23.1.99	5'4''	सोलंकी	बारोठिया	टांक	रेना	9829958511	चित्तौड़गढ़
भूमिका	M.Com., CA	MNC (American)	17.9.91	5'1''	नेमीवाल	तोंदवाल	खोरानिया	देवतवाल	9414590632	अजमेर
अनीशा	B.Sc. (chemi)	Pvt. School	18.10.97	5'5''	तोंदवाल	दम्बीवाल	मामोडिया	दौराया	9829129917	जयपुर
कविता	B.Com., CA	Manager Central Bank	27.3.95	5'3''	मामोडिया	सोकल	मारवाल	सारड़ीवाल	9794597401	जयपुर
सुरभी	B.Com.MBA(HRN)	HR Manager	17.12.92	5'4''	जूनवाल	दोराया	सिरस्वा	खरकटा	9414045277	जयपुर
निहारिका	Bacholor of Design	(IIT) Disigner	5.9.2000	5'6''	सारड़ीवाल	महरावंडया	खोवाल	कारगवाल	9414030084	जयपुर
मनीषा	B.Tech. (CS)	Developor at DOITC	28.3.96	5'1''	जालवाल	मारोठिया	खोरानिया	किरोड़ीवाल	9314633740	जयपुर

नोट : 1. यदि आप अपनों की वैवाहिक जानकारी नि:शुल्क प्रकाशित कराना चाहते हैं तो उक्त कॉलम के अनुसार कार्यालय को जानकारी प्रेषित करें।

2. प्रदत्त सूचना के आधार पर यदि आपके किसी अपने का सम्बन्ध हो जाये तो कृपया 'कुमावत इंडिया' पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।

3. उपरोक्त वैवाहिक बायोडाटा की जानकारी व्यक्तिगत, विभिन्न वैवाहिक ग्रुप एवं मीडिया के द्वारा प्राप्त हुई है।

पोस्टकार्ड से भी कम कीमत पर आपका संदेश, विज्ञापन समस्त भारत में पहुँचाने का एकमात्र सशक्त माध्यम "कुमावत इंडिया पत्रिका"

समाज बन्धुओं से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशन हेतु यदि आप प्रकाशन सामग्री:- समाचार, फोटो, लेख, कविता, प्रतिभाओं का परिचय, सामाजिक गतिविधियों, जनउपयोगी सूचना आदि प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो कृपया kumawatindiapatrika@gmail.com पर मेल करें अथवा कार्यालय पते पर सामग्री प्रेषित करें।

-सम्पादक

आवश्यक सूचना

पत्रिकाएं नियमित रूप से हर माह की 25 तारीख को जयपुर से निर्धारित डाकघर में भेज दी जाती हैं। यदि किसी सदस्य को एक सप्ताह के अन्दर पत्रिका नहीं मिलती है तो आप अपने पोस्टमैन व पोस्ट मास्टर से शिकायत करें एवं हमें भी सूचित करें।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के तथ्य, आंकड़े व विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं तथा इसकी मौलिकता व सत्यता के लिए सम्पादक मण्डल, पत्रिका, प्रकाशक एवं ट्रस्ट विधिक रूप से उत्तरदायी नहीं है।

■ किसी भी लेखन सामग्री या उसके किसी भाग के लिए प्रकाशन से 2 माह बाद कोई आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी।

समस्त विवादों के लिए न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

सदस्यता समाप्ति सूचना

सदस्यता संख्या 5/1 से 5/23 पांच वर्षीय के सदस्यों को सूचित किया जाता है कि उसकी सदस्यता समाप्त हो गई। कृपया शीघ्र नवीनीकरण करावें।

सामाजिक संस्थाओं व ट्रस्टों को विज्ञापन में 10 प्रतिशत की छूट।

पूर्वजों की याद को संजोये रखे

'कुमावत इण्डिया' पत्रिका ने यह सुविधा दी है, समाज बन्धु अपने पूर्वज (माता-पिता, दादा-दादीजी, नाना-नानी आदि) की पुण्य तिथि 1/8 पेज में मल्टीकलर में फोटो सहित, शुल्क 500 रुपए एक बारीय अथवा 4000 रु. जमा कराकर 10 वर्ष तक प्रकाशित करा सकते हैं। - सचिव

पता बदलने तथा पत्रिका नहीं मिलने पर मो. 9414554322 पर नया पता पिन कोड सहित व्हाट्सएप करें।

-: विशेष निवेदन :-

1. **शोक समाचार, तीये की बैठक के समाचारों में नाम के साथ 'कुमावत' अवश्य लगाएं। क्योंकि समान गोत्र अन्य समाजों में भी मिलते हैं।**
2. **इस पत्रिका में हाल ही में दिवंगत हुए समाजजनों की श्रद्धांजलि एक लाईन में नि:शुल्क प्रकाशित की जाती है। इस हेतु पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।**

'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिलने पर यहां सम्पर्क करें

डाक विभाग एवं अन्य के कारणों से आपको पत्रिका नहीं मिलती है तो कृपया अपने नजदीक सेन्टर पर जाकर प्राप्त करने का कष्ट करें तथा कृपया पत्रिका कार्यालय को पत्र, पोस्ट कार्ड आदि द्वारा सूचित करने का कष्ट करें।

जयपुर :

1. **लालकोठी बापूनगर**-श्री सुरेन्द्र नागा, सिवाड़ एरिया, बापूनगर, मो. 9414994006
2. **शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री महेश जलान्धरा मो. 9509344684
3. **कुमावत कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री सुरेन्द्र मारोठिया मो. 9314820385
4. **जयपुर शहर**-श्री राजसिंह बधानियां, म.नं. 454, मिश्र राजाजी का रास्ता, मो. 9414238799
5. **सांगानेर**-श्री भीमसिंह सिरोहिया, मालपुरा गेट मो. 9414359364
6. **मालवीय नगर**-श्री लक्ष्मीनारायण घोड़ीवाल, 7/218, मालवीय नगर, जयपुर मो. 9549656438
7. **22 गोदाम**-श्री चेतन बालोदिया, राज ब्लॉक, बी-81, रोड नं. 4 मो. 9414052736
8. **आदर्श नगर, तिलक नगर**-श्री शैलेन्द्र खड़गटा, खड़गटा भवन, मोती डूंगरी, जयपुर मो. 9351682036
9. **दहमी कलां, बगरू**-श्री चेनसुख बड़ीवाल, ग्लोबल एकाउन्ट सर्विस दहमी कलां बालाजी स्टेण्ड मो. 9929012987
10. **करधनी-कालवाड़ रोड**-श्री गणेश राम मारवाल, मै. जयश्री राम हार्डवेयर एण्ड पावर टूल्स टिम्बर दुकान नं. 90-91, करधनी शॉपिंग सेन्टर 9 दुकान कालवाड रोड, मो. 9828063267
11. **टोंक फाटक**- गणपति आर्ट एण्ड फ्रेम, 26 आदर्श बस्ती, मो. 8058157147
12. **बरकत नगर-महेश नगर**-श्री विशाल कम्प्यूटर्स, बरकत नगर महेश नगर फाटक के पास, जयपुर, मो. 94613-43432
13. **ब्यावर**-श्री नरेन्द्र आर्य, मो. 8107944493
14. **दिल्ली**-श्री राधेश्याम घासोलिया, मो. 9818711580
15. **फुलेरा**-श्री सुरेश नागा, जगदम्बा प्रिंटिंग प्रेस, बस स्टेण्ड के पास
16. **सोडाला** -घनश्याम फोटो लेमिनेशन एण्ड फ्रेमिंग, 31, कुमावत कॉलोनी, मो.9352070394

नेशनल पॉवर लिफ्टिंग में 7 गोल्ड जीतने पर दुर्गा कुमावत सम्मानित

सूरजपुरा गांव, शाहपुरा की बेटी दुर्गा कुमावत ने परिवार की प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद नेशनल पॉवर लिफ्टिंग में 300 किग्रा वजन उठा कर अब तक 7 गोल्ड मेडल तथा 2 सिल्वर मेडल जीत कर परिवार, समाज तथा अपने गांव का नाम रोशन किया है।

शाहपुरा जिला परिषद सदस्य बालुराम कुमावत ने दुर्गा कुमावत की इस उपलब्धि पर शम्भूपुरा गांव बुलाकर इसे सम्मानित किया तथा 21 हजार रुपये प्रोत्साहन राशि दी। इस अवसर पर रामस्वरूप कुमावत, सीताराम कुमावत, प्रहलाद कुमावत, चित्रा कुमावत सहित गांव शम्भुपूरा के गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

दुर्गा कुमावत ने इस अवसर पर कहा कि उसका सपना एशियन गेम्स में भाग लेकर भारत के लिए पदक जीतने का है। 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से दुर्गा कुमावत को बहुत-बहुत शुभकामना।

पवन ने कजाकिस्तान में जीता गोल्ड मेडल

18 जुलाई 2024 को कजाकिस्तान में 11वीं वर्ल्ड स्ट्रैन्थ लिफ्टिग चैंपियनशिप में पवन कुमावत ने इंकालाई बेंच प्रेस के 76 किलो भार वर्ग में 245 किलो वजन उठा कर एक बार फिर देश के लिए गोल्ड मेडल जीता।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से पवन कुमावत को गोल्ड मेडल जीतने पर हार्दिक बधाई।

विष्णु प्रसाद बने सचिवालय संघ के मंत्री

फागी कस्बे के निवासी नितेश कुमावत पुत्र श्री विष्णु प्रसाद कुमावत को राजस्थान सचिवालय कर्मचारी संघ के मंत्री पद पर मनोनीत किया गया है। इस दौरान मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा व मुख्य सचिव सुधांश पंत की उपस्थिति में नितेश कुमावत को मंत्री पद की शपथ दिलाई गई तथा उनका माला पहनाकर स्वागत किया। नितेश कुमावत के मंत्री मनोनीत होने पर कुमावत समाज, परिवारजनों एवं कस्बे के लोगों ने खुशी जताई है।

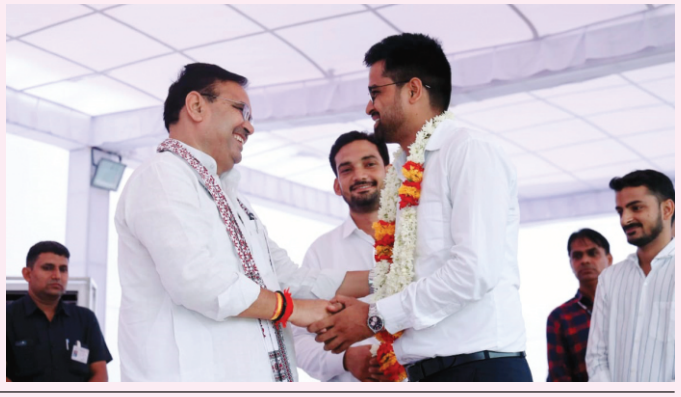

इंटरनेशनल बैडमिंटन खिलाडी हर्षित चौधरी ने जीते मेडल

7 जुलाई 2024 को हर्षित चौधरी, इंटरनेशनल बैडमिंटन खिलाडी ने पैरालंपिक युगांडा बैडमिंटन इंटरनेशनल में 2 ब्रोंज मेडल जीतकर कुमावत समाज, केसरीपूरा, सांवेर नगर जिला इंदौर का नाम रोशन किया है। कुमावत हर्षित नितिन चौधरी (सिंदड) का इस इंटरनेशनल जीतकर आने पर केसरीपुरा सांवेर में रैली निकाली गई व भव्य स्वागत किया गया तथा हर्षित चौधरी ने वरिष्ठ समाजजनों का आशीर्वाद लिया।

इस अवसर पर पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष व भाजपा जिला उपाध्यक्ष दिलीप चौधरी, साँवेर नगर परिषद अध्यक्ष संदीप चंगेडिया, शंकर लाल चौधरी, जगदीश चौधरी, भाजपा किसान मोर्चा मण्डल उपाध्यक्ष नेमीचंद कारवाल, दिलीप गौठवाल,आदि समाजजनों ने मुँह मिठाकर कर बधाई दी एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हर्षित चौधरी को हार्दिक बधाई।

चार्टेड अकाउंटेंट (CA) बनने पर 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई

चेतना कुमावत
पुत्री श्री यशपाल कुमावत

तनिशा कुमावत
पुत्री श्री विजय कुमावत

पवन कुमावत
पुत्र श्री राकेश कुमावत

कृष्ण कुमार कुमावत
पुत्र श्री कैलाश चन्द कुमावत

मुदित का सेनाओं की टॉप ब्रांच में चयन

UPSC NDA Exam में rank 52 पर मुदित कुमावत का चयन हुआ है। तीनों सेनाओं में टॉप ब्रांच NDA Flying branch खड़गवासला, पुणे में इन्होने ज्वाइन कर लिया है। यह समाज के लिए गर्व की बात है। ये समाज के युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत बन गये है। 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से मुदित कुमावत को हार्दिक बधाई।

डॉ. गणपत लाल को बीएएमएस की उपाधि

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय जोधपुर के विश्व सप्तम दीक्षांत समारोह में काजीपुरा गांव के डॉ. गणपत लाल कुमावत पुत्र गोविन्द राम नागा को बीएएमएस की उपाधि प्रदान की गई। डॉ. गणपत अभी राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान से द्रव्यगुण में एमडी कर रहे हैं। 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से डॉ. गणपत लाल को हार्दिक बधाई।

आभार

हमारे प्रिय

श्री दिनेश कुमार

पुत्र स्व.श्री रामदयाल गेदर के आकस्मिक निधन 5 जुलाई 2024 को हो जाने पर आपने स्वयं पधारकर, शोक संदेश भेजकर, फोन पर व व्हाट्सएप संदेश द्वारा तथा सांत्वना देकर हमें संबल दिया उसके लिए आप सभी का आभार।

आभारकर्ता

श्रीमती फूला देवी (माताजी) श्रीमती नमिता (पत्नी), श्रीमती अमिता-रमेश Rtd. CTO व श्रीमती अंजना-सतीश (भ्रातावधु-भ्राता) गणपति आर्ट एन फ्रेम, हिमांशु-श्रीमती खुशबू (पुत्र-पुत्रवधु), चारू (पुत्री), श्रीमती मेघावी-पारितोष व जशित (भतिजा वधु-भतिजे), अव्यान (पोत्र), श्रीमती कमला-श्री राधेश्याम कारगवाल एवं स्व. श्रीमती संतोष-श्री ओमप्रकाश मारवाल (बहिन-जीजाजी), श्रीमती स्वीटी-मनीषजी व श्रीमती आयुषी-दीपेशजी (भतीजी-भतीजी दामाद) तथा गेदर परिवार।

ससुराल पक्ष : श्री जगदीश बालोदिया -स्व. श्रीमती कृष्णा (श्वसुर-सास), मनोज व अशोक (साले)।

26, आदर्श बस्ती, गली नं.-2, टोंक फाटक, जयपुर
मो. 9414554322, 8058157147

श्रद्धांजलि स्वरूप वृक्षारोपण

4 जून 2024 को उज्जैन निवासी कुमावत जागृति मासिक पत्रिका के प्रधान संपादक व वरिष्ठ समाजसेवी श्री मनोहर लाल जी कुमावत का हृदय गति के कारण स्वर्गवास हो गया था । स्व.मनोहरलाल जी कुमावत के स्वभाव के कारण उनके प्रति कुमावत समाज के युवाओं का उनसे विशेष लगाव था।

इसके कारण केशरीपुरा साँवेर के युवाओं ने उनकी स्मृति में शासकीय माध्यमिक विद्यालय केशरीपुरा में पौधे लगाकर उनको श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर भाजपा किसान मोर्चा मण्डल उपाध्यक्ष नेमीचंद कारवाल, विजय बाथरा, शरद मांडिवाल, तरुण मांडिवाल, नीरज मुंडेल, मोनू कोटवार, सचिन कारवाल, सुनील धनेरिया आदि ने अपनी सहभागिता निभाई।

नरेंद्र कुमावत पुत्र श्री सीताराम कुमावत का आईआईटी रुड़की में चयन पर बधाई।

ज्योति ग्रुप ऑफ स्कूल्स को सर्वश्रेष्ठ सम्मान

शिक्षा मंत्री श्री मदन दिलावर द्वारा ज्योति ग्रुप ऑफ स्कूल्स के निदेशक डॉ. रजनीश जी कुमावत और मनीष जी कुमावत को बच्चों की शिक्षा के प्रति समर्पण और अनुकरणीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। स्कूल को शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए सर्वश्रेष्ठ स्कूल का पुरस्कार मिला! इस गौरव व शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए मिले सम्मान के लिए 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से बधाई।

प्रिय बेटे,

सुयोग कुमावत सुपुत्र श्री राजकुमार वर्मा (पालडीवाल) पूर्णिमा कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग से बी.टेक (ऑनर्स) की डिग्री प्राप्त करने और दीक्षांत समारोह में **उच्चतम अंक के साथ विशिष्टता (डिस्टिंक्शन) हासिल करने** पर **हार्दिक बधाई!** यह तुम्हारी कड़ी मेहनत, लगन और समर्पण का प्रमाण है। हमें तुम पर गर्व है और यह उपलब्धि हमारे लिए भी अत्यंत गर्व का क्षण है।

तुम्हारी यह सफलता तुम्हारे अथक परिश्रम और समर्पण का परिणाम है। तुम्हारी इस यात्रा में तुम्हारी दृढ़ता और संकल्प ने हर चुनौती को पार किया और तुम्हें इस महत्वपूर्ण मुकाम तक पहुँचाया। हमें यकीन है कि तुम भविष्य में भी इसी तरह नई ऊँचाइयों को छूते रहोगे और अपने जीवन के हर क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करोगे।

हम तुम्हारे उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि तुम्हारी हर मंजिल साकार हो। इसी तरह मेहनत और लगन से आगे बढ़ते रहो और हर सपने को पूरा करो।

अपने **दादा श्री सरदार सिंह पालडीवाल व दादी गीतेश देवी पिता श्री राजकुमार पालड़ीवाल (वर्मा)** व अपनी **मां श्रीमती सीमा कुमावत (मारवाल)** व अपने **छोटे भाई दक्ष कुमावत** व अपने **नाना स्वर्गीय श्री चिरंजीलाल मारवाल व अपनी नानी श्रीमती कैलाश देवी** और अपनी **प्रिय मौसी विजयलक्ष्मी कुमावत** व सभी परिवार जनों को गर्व महसूस करवाया।

ढेर सारी बधाइयाँ और शुभकामनाएँ!

कुमावत समाज को सुयोग पर गर्व है।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

Director
Mukesh Kumawat
93146-07695

Managing Director
C.M. Kumawat
98290-56063

Director
Lokesh Kumawat
97837-83123

CMT ARTS INDIA PVT LTD.

MANUFACTURER, EXPORTER, IMPORTER & WHOLESALER OF
All kind of : HANDICRAFT, GIFT AND SOUVENIR

Since 1976

Speciality :
1. Cedar Wood/ Kadamba wood with fine carving and half antique.
2. Sandalwood artifacts 3. Brass metal with turquoise work and Antique finish
4. Marble with painted & embossed art 5. Cultured marble 6. Soft stone 7. Miniature Art

Showroom :
"Sai-Villa", Plot No. 39, Mission Compound,
C-Scheme, Near Ajmer Puliya (Bridge)
Jaipur 302 001 (Raj.) Tel: +91-141-4041561

Residence :
F-31/A, Lal Bhadhur Nagar (W),
S.L. Marg, Main Road, Durgapura,
Tonk Road, Jaipur - 302018 (Raj.)

Email: cmtartsindia@gmail.com

Website : www.sandalwood.cn.com

SP CONSTRUCTION

Building INDIA'S Construction

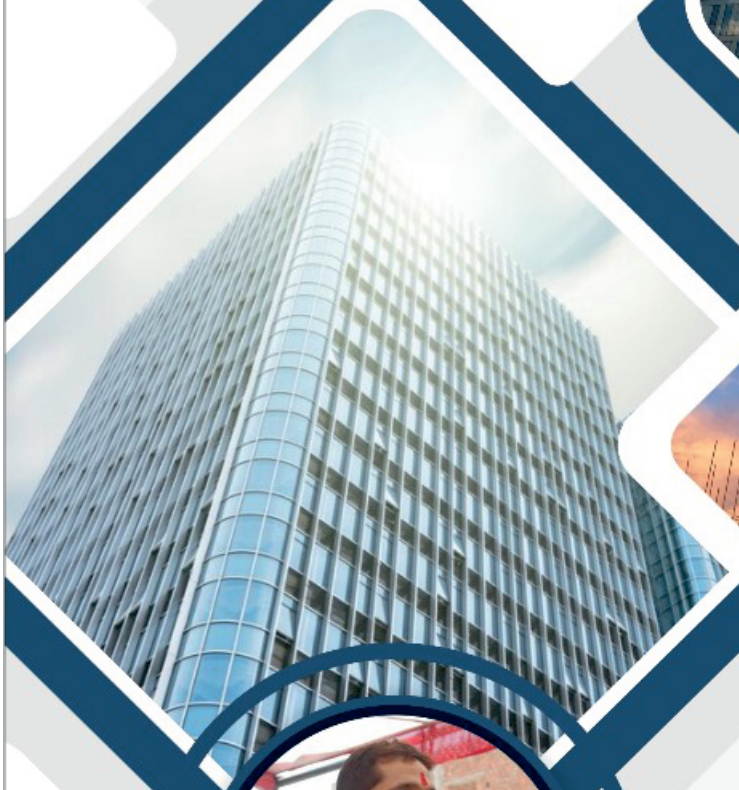

SHASHI PAL KUMAWAT

B-34, Devi Chiranjivi Colony, Surya Nagar, Gopal Pura Bye Pass, Jaipur 302015

Web: spconst.co.in E-Mail: info@spconst.co.in

Shubh Laxmi Crane & Engineers

(Formally Know as Shri Laxmi Crane Service)

All India Equipments Rental Service Provider

Jai Kishan Kumawat
+91- 9829125428
+91- 9887011175

Shankar Lal Kumawat
+91- 9887227775

Mukesh Kumar Kumawat
+91- 9887337775

H.O.
Shree Heera Bhawan, Dholi Mandi
Chomu-303702 Distt. Jaipur (Rajasthan)

B.O.
Near Patwar Bhawan,Village - Kawas
Distt. Barmer - 344035 (Rajasthan)

shreelaxmicranes@gmail.com
shubhlaxmicrane@gmail.com

www : shrilaxmicrane.com

Graphic By : Art point # 9928064300

RNI - RAJHIN/2017/74285

प्रेषक: कुमावत इंडिया पत्रिका
एफ 31/ए, एस. एल. मार्ग,
लाल बहादुर नगर-प., दुर्गापुरा, जयपुर - 302018